- अध्याय प्रथम -

" झोपडपट्टी : स्थिति और गति "

1. झोपडपट्टी की संकल्पना
2. झोपडपट्टी : एक जागतिक समस्या
3. भारत में स्थित झोपडपट्टियों की स्थिति
4. बम्बई महानगर की झोपडपट्टियों की स्थिति और गति
5. महानगरीय जनजीवन की समस्याओं का झोपडपट्टी निर्मिती में योगदान
6. नागरीकरण के कारण -
   - अ) औद्योगिक कारण
   - ब) यातायात और संचार के माध्यम
   - क) आर्थिक कारण
   - ड) राजनीतिक कारण
   - इ) सांस्कृतिक कारण
7. नगर-महानगर-विशालनगर: विकासयात्रा
8. नगरों का वर्गीकरण
9. मानवी जीवन और महानगरों का आकर्षण
10. बम्बई में स्थित धारावी झोपडपट्टी में परिवर्तन की हवा
11. चुनावी राजनीति में झुग्गी-झोपडियों का योगदान
12. बम्बई महानगर और झोपडपट्टी निर्मूलन अभियान
13. महानगरीय जनजीवन की समस्याएँ : एक अवलोकन

- अध्याय प्रथम -

' झोपडपट्टी : स्थिति और गति '

१. झोपडपट्टी की संकल्पना :-

झोपडपट्टी को अंग्रेजी में ' Slum ' कहते हैं। ' Slum ' का अर्थ है - "Thickly populated squalid part of a city, in hibited by the poorest people."[1]

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में ' Slum ' का अर्थ है -

"Dirty squalid overcrowded street."[2]

यह स्पष्ट है कि झोपडपट्टी गहन आबाधिवाला गन्दा मोहल्ला या गरीब लोगों की बस्ती होता है, जहाँ हर तरह के नशापान, अवैध धन्धें चलते हैं।

भारत के बडे-बडे महानगरों में झुग्गी-झोपडियों के अलग-अलग नाम होते हैं। दिल्ली में स्थित गन्दी झोपडपट्टियों को 'बस्तियाँ' अथवा 'झुग्गी-झोपडियाँ' कहा जाता हैं। मद्रास में इसे 'चेरी', कलकत्ता में 'बेस्ती' और कानपुर में 'अहाते' इन नामों से झोपडपट्टियों को पहचाना जाता है। महाराष्ट्र में इसे 'झोपडपट्टी' नाम से ही पुकारा जाता है।

झोपडपट्टियों की संकल्पना स्पष्ट करते हुए 'फोर्ड' कहते है - 'महानगर के जिस परिवेश में स्थित आवास स्थान रहने के लिए निम्नस्तर के, अधूरे, आरोग्य के लिए विघातक, सुरक्षितता के लिए हानिकारक होते हैं, ऐसे परिवेश को झोपडपट्टी कहा जाता है।'[3]

'जबरदस्ती से हडप की हुयी अविकसित, दुर्लक्षित, गहन आबादीवाली जीर्ण दुर्लक्षित बस्ती को गलिच्छ और गन्दी बस्ती कहा जाता है।'[4]

औद्योगिकरण के विकास के कारण नगर नियोजन में अव्यवस्था का निर्माण हुआ फलतः भारत में बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, दिल्ली, कानपुर इन महानगरों में गन्दी झोपडपट्टियों का विकास हुआ। आंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त संस्थान, इग्लैंड, फ्रान्स तथा अन्य कई पाश्चात्य राष्ट्रों में भी झोपडपट्टियों की बढौत्री हुई। हंटर के मतानुसार - 'गन्दी झुग्गी-झोपडियाँ महानगरीय जन-जीवन को लगा एक भयंकर कैंसर है।'[5]

महानगरीय विकास के साथ-साथ महानगर में स्थित कई भागों की तरफ दुर्लक्ष होता हैं। जो भाग विकास क्षेत्र में आता है वहाँ आसमान को छुनेवाली इमारतों का निर्माण होता है। ऐसे

विकसित माहौल में बड़े-बडे अस्पताल, शैक्षिक संस्थाएँ, प्रार्थना मन्दिर देखने को मिलते हैं। महानगर का जो भाग दुर्लक्षित रहता है वहाँ पर झुग्गी-झोपडियों का निर्माण होता है। ये झुग्गी-झोपडियाँ महानगर की मानसिकता में बिगाड लाती है। इन झोपडियों में आर्थिक विषमता, दरिद्रता, अस्वच्छता देखने को मिलती है। ऐसी बस्तियों में स्कूल, अस्पताल आदि की कमियाँ रहती है। इन झोपडियों में प्राथमिक सुविधाएँ भी अभाव से मिलती हैं। पानी की कमी के कारण सार्वजनिक नल पर संघर्ष देखने को मिलता है। गुसलखाने की कमियाँ, खुली गटार-गंगा इस गन्दी बस्ती की कुरूपता में अपना योगदान और भी बढाती हैं। ऐसे अभावग्रस्त इलाके में गुनहगारी, गुण्डइ झगडे, मारकाट, गाली-गलौज आदि का साम्राज्य छा जाता है। इसका दुष्परिणाम वहाँ के छोटे-छोटे बच्चों की मानसिकता पर होता है।

निष्कर्ष :

हमने यहाँ झोपडपट्टी की संकल्पना को प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि - गहन आबादीवाला गंदा मोहल्ला जहाँ अभावग्रस्त लोग रहते हैं, जो नशैले पदार्थों का सेवन करके अवैध धंधे करते हैं। भारत के बड़े-बडे महानगरों में औद्योगिक विकास के परिणाम स्वरूप गंदी झुग्गी-झोपडियों का निर्माण हुआ है। ऐसे विशिष्ट भूभाग को भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से पुकारा जाना है। जैसे मद्रास में 'चेरी', कलकत्ता में 'बेस्ती', कानपुर में 'अहाते' तो महाराष्ट्र में 'झोपडपट्टी'। झोपडपट्टी की बढौत्री आज इंग्लैंड, फ्रान्स आदि प्रांतो में भी हो रही है। ये झुग्गियाँ महानगरों के विकास के लिए एक भयंकर कैन्सर है। महानगर का दुर्लक्षित, अविकसित, सभी आवश्यक सुविधाओं से अछूता, दारिद्रय, असाध्य बिमारियों से और अर्थाभाव से ग्रस्त, मारकाट, खून-खराबा, संघर्ष, आपसी झगडें और गाली-गलौज, अशिक्षा, अंधविश्वास से पीडित जो भूभाग होता है उसे झोपडपट्टी कहा जाता है। महानगर के उच्छिष्ट पर झोपडपट्टी पलती है।

2. **झोपडपट्टी : एक जागतिक समस्या :-**

।8 वीं शती के बीच में युरोप में औद्योगिक क्रांति का आरम्भ हुआ। नये-नये यंत्रों और मशिनों के प्रसार से उत्पादन में वृध्दि हुई और औद्योगिकरण का विकास हुआ। नगर और महानगर विकसित होने लगें। इग्लैंड के जमीनदारों ने कृषि-व्यवस्था पर अपना काबू किया। परिणामतः सर्वहारा किसानों में बेकारी बढ गई। उदरपूर्ति के लिए ऐसे बेगार, सर्वहारा शहरों की तरफ मुड़ें। शहरों में ऐसे लोगों की भीड तो बढती गयी, परन्तु उनके आवास की व्यवस्था न होने के कारण मिली हुयी खाली जगह पर ये लोग झोपडपट्टियाँ बनाकर रहने लगे। युरोप खण्ड जैसी स्थिति 20 वी सदी के उत्तरार्ध में एशियाई देशों में भी निर्माण हुई और एशिया खण्ड के महानगरों में भी झोपडपट्टी निर्मिती की हवा फैलती रही।

आरोग्य के लिए विघातक मलिच्छ बस्तियाँ, दरिद्रता एवं सामाजिक अव्यवस्था से युक्त बकाल उपनगरीय भाग झोपडपट्टी के रूप में विकसित होने लगा। जैसे - जैसे औद्योगिकरण के विकास के साथ-साथ महानगर विकसित होने लगे वैसे-वैसे शहरों में झुग्गी-झोपडियाँ बढने लगी। युरोप के कई शहरों में ये बस्तियाँ अधिक मात्रा में विकसित हुई। फलतः झोपडपट्टी युरोप के लिए एक चिन्ता का विषय बनी। वहाँ इन्सानियत के तौर पर मजदूरों को उचित किराए पर आवास की व्यवस्था करा देने के लिए विचार-विनिमय शुरू हुआ। इग्लैंड में सन 1845 में सर्वहारा मजदूरों की बस्तियों में सुधार करने के लिए एक समिती स्थापित की गयी। सन 1851 में इसी के परिणामस्वरूप ब्रिटीश संसद में 'मजदूर गृह निर्माण कानून' पारित किया गया। इस कानून के अनुसार मजदूरों के लिए निर्मित घरों में कम-अधिक मात्रा में सुविधाएँ उपलब्ध करा देने का बन्धन लगवाया गया। इस संसद में सन 1868 में झोपडपट्टियाँ गिराने के लिए और झोपडपट्टियों के सुधार के लिए भी कानून बनाये गये। 20 वी सदी के प्रारम्भ में झुग्गी-झोपडियों को ध्वस्त करने के लिए और सुविधाओं से युक्त आदर्श मजदूर बस्तियों की निर्मिती के लिए कई प्रयत्न किये गये। सन 1901 में 'गृह-निर्माण' और 'नगर नियोजन कानून' पारित करके झोपडपट्टी निर्मूलन पर भी सोचने का प्रयत्न किया गया।

'एशिया में दूसरे महायुध्द के बाद औद्योगिकरण को बढावा मिला, बडे-बडे शहरों में और महानगरों में कल-कारखाने खोले गये। देहात में रहनेवाला भूमिहीन, सर्वहारा वर्ग शहरों की तरफ मुडने लगा और शहरों में भीड बढने लगी। एशिया खण्ड के अविकसित देशों को औद्योगिकरण के प्रारम्भिक कालखण्ड में इन लोगों को आवास की सुविधा उपलब्ध करा देना कठिन काम था। फलतः जहाँ भी खाली जगह मिले लोग वहाँ पर झोपडियाँ बांधकर रहने लगें। महानगरों में झुग्गियों की संख्या बढने लगी, जिससे अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक दुष्परिणामों की समस्याएँ उभरने लगी।'[6]

निष्कर्ष :

स्पष्ट है कि, झोपडपट्टी की समस्या केवल भारत की ही नहीं, यह एक जागतिक समस्या बन बैठी है। औद्योगिकरण के विकास के साथ-साथ गावों में रहनेवाले बेगारी में जीवन व्यतीत करनेवाले सर्वहारा वर्ग के लोग शहरों की ओर दौड पड़ें। जगह की कमी, अवासस्थान के अभाव के कारण जहाँ भी खाली जगह मिली झोपडियाँ बनाकर वे रहने लगें। युरोप के साथ-साथ एशिया खंड में भी झुग्गी-झोपडियाँ पनपने लगी। महानगरों के और नगरों के विकास के साथ-साथ झुग्गी-झोपडियों का भी विकास होने लगा। योरोप-अंग्लैण्ड में झुग्गी-झोपडियों की

स्थिति में सुधार करने के हेतु 'मजदूर गृह निर्माण' कानून पारित किया गया। झोपडपट्टियों को गिराने के कानून भी पारित किये गये। नगर नियोजन कानून बनाकर झोपडपट्टियों की विकृती से नगरों की मानसिकता को सुस्थिर रखने का प्रयत्न आज सभी देशों में हो रहा है। झुग्गी-झोपडियों से बढनेवाली अनेक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं से बचने का प्रयत्न आज जागतिक स्तर पर हो रहा है। महाराष्ट्र में बंबई जैसे महानगर में बसी झुग्गियों का निर्मूलन करने के लिए सरकार प्रयत्न कर रही है।

3. **भारत में स्थित झोपडपट्टियों की स्थिति :-**

भारत जैसे विकसनशील देश में झुग्गी-झोपडियों की समस्या अत्यंत गंभीर बनती जा रही है। बडे-बडे महानगरों में औद्योगिकरण के विकास के साथ-साथ बढती हुयी आबादी के परिणामस्वरूप जगह की तंगी का निर्माण हुआ। औद्योगिकरण के और शहरों के विस्तार के साथ-साथ सामाजिक वर्गों में वैषम्य की खाई का निर्माण हुआ। आर्थिक तंगी, आवासस्थानों की कमी के कारण भारतीय महानगरों में झोपडपट्टी एक ज्वलंत समस्या बनी। इन झोपडपट्टियों में रहनेवाले लोगों की संख्या भी दिन-प्रतिदिन बढने लगी। कार्यालयों में काम करनेवाले क्लर्क, शिपाई, बैंक-कर्मचारी, डाकिया, सरकारी कर्मचारी आदि का समावेश इन झुग्गी-झोपडियों में रहनेवाले लोगों में होने लगा। 'हाल ही में हुई गिनती के अनुसार भारत में स्थित बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, दिल्ली आदि चार महानगरों में स्थित झोपडपट्टियों में रहनेवाले लोगों की संख्या एक करोड के आसपास है। इनमें से बम्बई में 28 लाख 3। हजार लोग, दिल्ली में ।8 लाख लोग, मद्रास में ।3,69,000 लोग तो कलकत्ता में 302 8,000 लोग झोपडपट्टी में रहते हैं।'[7]

स्पष्ट है कि - आज भारत में स्थित कलकत्ता, दिल्ली, बंबई, मद्रास जैसे महानगरों में करोडों लोग आवास्थान की कमी के कारण झोपडपट्टी में रहते हैं। कअी करोडों लोग ऐसे भी हैं जिन्हें झोपडपट्टी भी नसीब में नहीं होती है, वे फुटपाथ पर अपनी गृहस्थी बसा रहे हैं।

4. **बम्बई महानगर की झोपडपट्टियों की स्थिति और गति :-**

बम्बई महानगर आंतरराष्ट्रीय स्तर का एक प्रमुख औद्योगिक केन्द्र और व्यापारी केन्द्र है। भारत की अर्थनीति पर इस शहर का गहरा प्रभाव लक्षित होता है। इस औद्योगिक और व्यापारिक महानगर की तरफ ग्रामांचलों में स्थित बेकार लोगों की भीड अपने उदरपूर्ति के साधनों को जुटाने के लिए हमेशा लगी रहती है। वहाँ आवास स्थान की कमियाँ, जमीन की आसमान को छुनेवाली किमतें देखकर ये लोग जहाँ पर भी खाली जगह मिले वहाँ झोपडियाँ बनाकर रहना पसंत करते हैं। परिणामस्वरूप बम्बई को चारों तरफ से झोपडपट्टियों ने घिराव डाला है। बम्बई में स्थित धारावी की झोपडपट्टी एशिया खण्ड की सबसे बडी झोपडपट्टी मानी जाती है। इसलिए

भारत में स्थित झोपडपट्टियों पर विचार करते समय बम्बई की झोपडपट्टियों को प्रतिनिधि के रूप में हम ले सकते हे। 'आज झोपडपट्टियों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर महत्व प्राप्त हो जाने के कारण झोपडपट्टी की समस्या राजकीय स्तर पर हल करने के लिए अनेक मार्ग तलाशे जा रहे हें।'[8]

'सन 1971 की गिनती के नुसार बम्बई में 77.4 प्रतिशत परिवार एक कमरे में रहते हैं, 14.2 प्रतिशत परिवार दो कमरेवाले घरों में, हाल ही की जाँच के अनुसार 8। प्रतिशत परिवार रसोईघर की सुविधा न रहनेवाले एक कमरें में रहते हैं। 40,000 से ऊपर परिवार एक ही घर में पार्टनरशीप में रहते हैं। कम-से-कम बम्बई में 50,000 परिवार बेघर हैं। 5 लाख से अधिक परिवार कोई भी सुविधा न रहनेवाली झुग्गी-झोपडियों में रहते हैं।'[9]

सम्पूर्ण भारत के नगरों और महानगरों को झुग्गी-झोपडी रूपी कैंसर ने ग्रस्त किया है। ठाणे, पुणे, नाशिक, नागपुर, औरंगाबाद आदि सभी शहरों में आज झोपडपट्टियाँ बढती जा रही हैं। आज झोपडपट्टी के माहौल में केवल दरिद्र लोक ही नही रहते तो आर्थिक दुर्बलता से ग्रस्त मध्यवर्गीय व्यक्ति भी वहाँ रहते हैं। परिणामस्वरूप झोपडपट्टी में रहनेवालों की संख्या बढने लगी हैं। निम्न वर्ग के लोग या बेघर लोग महानगर में स्थित खाली जमीन पर आक्रमण करते हैं और केवल एक ही रात्री में कही-कही स्थानों पर झोपडपट्टियों की निर्मिती हुई देखने को मिलती हैं। इन झोपडपट्टियों में पानी, बिजली और हवा की कमी के कारण अनेक समस्याओं का निर्माण वहाँ पर देखने को मिलता हे। गन्दगी के कारण आरोग्य की कई समस्याएँ निर्माण होती हैं। वहाँ अवैध व्यवसाय चलते हैं, शराब, अंमली-पदार्थ, नारी देह आदि का विक्रय होता रहता हे। ऐसी झोपडपट्टियों के कारण पूरे शहर की मानसिकता बिगड जाती हे इसलिए सरकार ने आज झोपडपट्टी निर्मूलन का कार्य हाथ में लिया है। कई सेवाभावी संस्थाओं और समाज-सुधारकों ने झोपडपटटी सुधार-कार्य शुरू किया हे। झोपडपट्टी निर्मूलन के लिए आंतरराष्ट्रीय सहकार्य भी लिया जा रहा हे।

स्पष्ट हे कि, बंबई अंतर्राष्ट्रीय स्तर का एक बडा औद्योगिक महानगर और व्यापारीक केंद्र होने के कारण बंबई में देश के कोने-कोने के गरीब और बेकार लोग उदरपूर्ति के लिए आये हैं। इससे बंबई में रेल-लाईन की ढलान पर, गटार गंगा के किनारे, फुटपाथ पर लाखों लोग आकर बसे हुए हैं। परिणाम स्वरूप बंबई महानगर को झोपडपट्टी के कैंसर ने पीडित किया हे। ये लोग अभावग्रस्त जिंदगी जीते हैं। अवैध-धंधे, तस्करी, अमली पदार्थों की बिक्री करते हैं, जिससे इस महानगर की मानसिकता में बिगाड आया हे। बंबई महानगर की मानसिकता को स्थिर रखने के लिए हमारी सरकार उन्हें सुविधाजन्य पक्के मकान बंधवा देने का प्रयत्न कर रही हैं।

5. **महानगरीय जनजीवन की समस्याओं का झोपडपट्टी निर्मिती में योगदान :-**

महानगर विकास के साथ-साथ उपनगरों की निर्मिती होना, बढती आबादी के कारण महानगरों पर बढनेवाला तनाव, महानगरीय भूखंडों की आसमान को छूनेवाली किंमतें, महानगर की भीड-भाड, यातायात के साधनों का अभाव, पुलिस प्रशासन पर बढनेवाला तान-तनाव, आवास स्थानों की कमियाँ, सुख-सुविधाओं का अभाव, पानी और बिजली की कमी आदि के कारण महानगरों में झोपडपट्टी विकास को बल मिला है। बढती आबादी के कारण यह शहरों के विकासों के कारण सर्वहारा लोगों को अधिक पैसा खर्च करके आवास स्थान की निर्मिती करना असम्भव होता है, इसलिए वे गटार-गंगा के किनारे, रेल-पटरी के पासवाले खुली जगह पर छोटे-छोटे टाट को बिछाकर रहते हैं और झोपडपट्टियाँ अधिकाधिक मात्रा में बढती रहती हैं। शहरों में घरों का किराया, पेशगी की रकम आदि को देखकर लोग बेघर रहना ही पसंद करतें और गंदी जगहों पर अपनी बस्तियाँ बनाते हैं।

मानव विचारशील और प्रयत्नशील प्राणी है। उसने अपने प्रयत्नों द्वारा विकास के अनेक द्वार खोल दिये। अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद वह भौतिक सुख-सुविधाओं का निर्माण और प्राप्ति के लिए अनवरत प्रयत्न करता रहा। मनुष्य की विचारशक्ती और प्रयत्नों से सम्पूर्ण मानव-जाति का स्वरूप ही बदलता गया। ज्ञान और विज्ञान के अनेक द्वार खोलकर उसने धरति को स्वर्ग बनाने का निश्चय किया। वैज्ञानिक प्रगति के कारण अनेकानेक उद्योगों का निर्माण हुआ और यही औद्योगिक प्रगति यंत्रीकरण की ओर बढती गयी। इसी यंत्रीकरण के कारण छोटे-छोटे गाँवों का रूप बदलकर गाँव कस्बों में परिवर्तित होते गये। कस्बें नगर बनने लगें और आज इस वैज्ञानिक और प्रगतिशील युग में नगरों का परिवर्तन महानगरों की ओर होने लगा है।

निष्कर्ष :-

स्पष्ट है कि महानगरीय औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप देश के विभिन्न भागों में लोग आकर महानगरों में बसते हैं और जगाह के अभाव में झोपडपट्टी निर्मिति में वे अपना योगदान निभाते हैं।

6. **नागरीकरण के कारण :-**

गाँव से कस्बा, कस्बे से नगर, नगर से महानगर बनने का यह क्रम अनवरत चलता आ रहा है। 19 वी शताब्दी में प्रथम महायुध्द और फ्रान्स की राज्यक्रांति ने संपूर्ण जगत् को झकझोर दिया। इस समय की औद्योगिक क्रांति ने प्रगति के अनेक शिखर लाँघ दिये। विश्वभर में इन घटनाओं के कारण उथल-पुथल हो गयी और प्राचीन मान्यताएं, प्राचीन यातायात के साधन सब धाराशायी हो गये। इग्लैंड, फ्रान्स के साथ-साथ अनेक देशों का आर्थिक प्रगति का ढाँचा बदलता

गया और औद्योगिक प्रगति का जाल फैलने लगा। यातायात के नवीन साधन, यन्त्रीकरण, नव-नवीन उद्योग, वैज्ञानिक खोज आदि के कारण संपूर्ण दुनिया का ढाँचा ही बदल गया। परिणामतः सम्पूर्ण जगत में नया मानवीय दृष्टिकोन, नयी वर्ग-व्यवस्था, नैतिकता का बदलता रूप और इसके साथ-साथ अनेक नवीन समस्याओं ने भी जन्म लिया। अंग्रेजों के शासनकाल में भारत में भी औद्योगिक प्रगति और नवीनीकरण का जन्म हुआ। शीघ्र गती से ग्रामों और नगरों में परिवर्तन होते गये। गाँव कस्बें बन गए, कस्बे नगर और नगर महानगरों में परिवर्तित हुए और यही क्रम आज भी चलता आ रहा है। नागरीकरण के अनेक कारणों की विस्तृत चर्चा हो सकती है। कुछ कारणों की निम्न प्रकार से संक्षिप्त में हम समीक्षा कर सकते है -

(अ) **औद्योगिक कारण :-**

भारत में औद्योगिकरण और यंत्रीकरण के कारण देश की अर्थव्यवस्था भी बदल गयी। अनेक बडे-बडे उद्योगों के निर्माण से नवनवीन वस्तुओं का निर्माण होता रहा। उद्योगों को चलाने के लिए श्रमिक-शक्ति की आवश्यकता पडने लगी। परिणामस्वरूप श्रमिक, मजदूर, व्यावसायिक आदि पैसा कमाने के हेतु नगरों की ओर दौडने लगे, नगरों की जनसंख्या बढने लगी और गाँव में आबादी घटने लगी। कृषि-व्यवसाय में भी यंत्रों के प्रादुर्भाव से व्यक्ति का श्रम कम हुआ और व्यक्ति व्यवसाय के हेतु नगरों की ओर दौडने लगा। पानी की सुविधा और यातायात के साधनों के अनुकूलता के कारण नगर, नदी, किनारे और समुद्र के तट पर बसने लगे। ऐसे ही अनेक महानगरों में दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, मद्रास, अहमदाबाद आदि का नाम लिया जा सकता है।

(ब) **यातायात और संचार के माध्यम :-**

औद्योगिकरण और यंत्रीकरण के साथ-साथ यातायात के प्रमुख साधनों का विकास अत्यन्त शीघ्रता से हुआ और नगर महानगर बनने लगे। नये महामार्ग, नदी-समुद्र में द्रुत गति से चलनेवाले जहाज, रेल और वायुमार्ग ने आव-भगत और यातायात की समस्या को हल कर दिया। संचार के अनेक माध्यमों ने जैसे रेडिओ, टेलिव्हिजन, वृत्तपत्र, टेलि-फोन, टेलेक्स, फिल्म-जगत आदि के कारण दुनिया एक दूसरे के बहुत करीब आ गयी।

(क) **आर्थिक कारण :-**

आज पैसा ही भगवान बन गया है। व्यवहार जगत में आदान-प्रदान का प्रमुख साधन पैसा होने के कारण सारी दुनियाँ पैसे के इर्द-गीर्द घुमने लगी हैं और अधिकाधिक पैसा, कम समय में कमाने के लिए लोग गाँव की खेती का व्यवसाय छोडकर शहर की ओर भाग-दौड करने लगे। लेन-देन और व्यापार-व्यवसाय के बढने से नगरों की संख्या और आबादी भी बढने लगी। बडे-बडे उद्योगों का विकास नगरों में ही होने के कारण नगर प्रमुख व्यापार-केन्द्र बन गये। इसलिए अनेक

नवीन नगरों की स्थापना उद्योग के आधार पर हो गयी और पुराने शहरों का नूतनीकरण और आधुनिकीकरण अत्यंत शीघ्र गति से होता गया।

(ड) **राजनीतिक कारण :-**

राजनीतिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र रहे हैं बडे-बडे महानगर। आंतरराष्ट्रीय राजनीतिक सम्बन्धों के रूप में देश की राजधानियों में बनते हैं विविध देशों के दूतावास और राज्यों की राजधानियाँ देशांतर्गत राजनीतिक गतिविधियों के केन्द्र बन रहे हैं। भारत की राजधानी महानगर दिल्ली है। दिल्ली में सभी देशों के दूतावास बने हैं। अनेक आंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन भी इसी शहर में होता है। इन समारोहों के लिए अनेक देशों से आनेवाले प्रमुख नेताओं और अधिकारियों की व्यवस्था के लिए अनेक पंचतारांकित रेस्तरों का निर्माण हुआ। विविध राज्यों की राजधानियों में भी इस प्रकार के अनेक होटलों का निर्माण होता रहा है। होटल, क्लब के साथ-साथ अनेक व्यापारिक प्रतिष्ठान भी यहाँ पर बने हैं और महानगरों का विस्तार एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में होने लगा है। राजधानियों में विविध देशों से एकत्रित होनेवाले अनेक नेताओं, मंत्रियों, अधिकारियों की सुख-सुविधा का तथा मनोरंजन का प्रबंध करने के लिए अनेक कारीगरों, व्यापारियों और कलाकारों का एक सम्मेलन ही महानगरों में दिखाई देता है। राजनैतिक गतिविधियों से संबंधित और अनेक कारणों से एकत्रित जमाव के आवास की समस्या को हल करने के लिए नगरों में नये-नये आवास बनते जा रहे हैं। राजनीतिक प्रमुखों की रक्षा और शहरों की सुव्यवस्था के हेतु पुलिस दल का काफी जमाव भी महानगरों में हुआ। महानगरों के विस्तार में पर्यटकों, बडे-बड़े व्यापरियों और स्मगलरों का भी योग रहा है। इस प्रकार भारत की राजधानी दिल्ली के साथ-साथ राजनीतिक गतिविधियों के कारण बम्बई, कलकत्ता, बंगलोर, अहमदाबाद, मद्रास आदि अनेक महानगरों की जनसंख्या बढती जा रही है और भौगोलिक विस्तार भी हो रहा हैं। राजधानियों के साथ छोटे-छोटे जिला स्तर के शहरों का विस्तार भी इन राजनीतिक क्रियाकलापों के कारण हो रहा है। कोर्ट, सरकारी कार्यालय, पुलिस व्यवस्था आदि के कारण नगरों की सीमाएँ विस्तारित हो रहे हैं। युध्द सामग्री की निर्मिती के कारण भी अनेक नगरों का विस्तार द्रुत गति से होने लगा है।

(इ) **सांस्कृतिक कारण :-**

प्रमुख सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र महानगर ही होता है। प्रत्येक बड़े शहर में कोई-न-कोई सांस्कृतिक प्रतिष्ठान होता ही है। बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास आदि महानगरों में इस प्रकार के विविध सांस्कृतिक केन्द्र हम देख सकते हैं। जहाँ पर संगीतकला, चित्रकला, नृतयकला, नाटयकला आदि का आयोजन होता है और देश के कोने कोने से इसमें सहभागी होने के

हेतु अनेक कलाकार नगरों की ओर आकर्षित होते हैं। अनेक कलाकार अपनी कला-प्रदर्शन हेतु नगरों में ही वास्तव्य करते हैं। दूसरी तरफ भारत में ऐसे अनेक शहर हैं जहाँ पर प्राचीन काल से आज तक लाखों, करोडों की संख्या में लोग भक्ति-भावना से आते हैं - जैसे काशी, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, हरद्वार, इलाहाबाद, पुरी, नासिक, तुळजापुर, पंढरपुर, गया, अमृतसर आदि अनेक तीर्थस्थलों का उल्लेख हम कर सकते हैं। विश्वविद्यालयों और विविध कलाओं की शिक्षा देनेवाले अनेक प्रतिष्ठानों ने भी लोगों को नगरों की ओर बहुत मात्रा में आकर्षित किया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि नगरों के विकास में सांस्कृतिक उपकरणों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

निष्कर्ष :-

स्पष्ट है कि औद्योगिकरण का विकास यातायात और दूरसंचार के माध्यम का विकास आर्थिकता और राजनीतिक गतिविधियों के केंद्र, सांस्कृतिक तथा धार्मिक स्थलों के कारण महानगर विकसित होते है फलतः झुग्गी-बस्तियों का निर्माण होता है।

7. **नगर-महानगर-विशालनगर : विकासयात्रा :-**

शहरों में व्यापार का प्रमुख केन्द्र होने के कारण व्यक्ति आजीविका के लिए अनेक व्यवसाय कर सकता हैं। छोटे-मोटे अनेक व्यवसायों द्वारा वह अपना और अपने परिवार का पेट पालन कर सकता है जब कि यह सुविधा उसे अपने गाँव में प्राप्त नहीं हो सकती, क्योंकि वहाँ जाति-पाँति के अनेक बन्धन और परम्परागत व्यवसाय करनेवाले अनेक लोग होते हैं। अब कृषि का दूसरा पर्याय न मिलने के कारण अनेक किसान और मजदूर शहरों की ओर भागने लगें क्योंकि शहरों में कम श्रम में रोजी-रोटी के सवाल को मिटाया जा सकता है। अपने गाँव और कस्बे से एक लोटा और धोती लेकर निकले हुए अनेक लोग आज बडे-बडे सेठ और उद्योगों के मालिक बनकर बैठे हैं। यह व्यापार और व्यवसाय का कमाल है, जो पैसा और थोडी-सी अक्ल से किया जा सकता है। युवकों के सम्बन्ध में हम कह सकते है कि थोडी-सी शिक्षा प्राप्त करके, उच्च शिक्षा के लिए और व्यवसाय या नौकरी करके पैसे कमाने के लिए लाखों की संख्या में युवक यहाँ आते रहे हैं। इन महानगरों के आकर्षण और मोहजाल ने सभी लोगों को अर्थात युवकों, व्यापारियों, कलाकारों को अपनी ओर खिंच लिया है।

निष्कर्ष :-

विकसनशील तथा विकसित महानगरों में व्यापार, छोटे-मोटे व्यवसाय, उच्च शिक्षा, व्यवसाय के बहाने लोगों की भीड बढती हैं। झोपडपट्टी निर्मिती के पिछे यह भी एक कारण हो सकता है।

8. **नगरों का वर्गीकरण :-**

"जनसंख्या के आधारपर नगरों का वर्गीकरण किया जा सकता है -

1. पाँच हजार से दस हजार जनसंख्या - छोटा कस्बा
2. दस हजार से बीस हजार जनसंख्या - कस्बा
3. बीस हजार से पचास हजार जनसंख्या - बडा कस्बा
4. पचास हजार से एक लाख जनसंख्या - नगर
5. एक लाख से दस लाख जनसंख्या - महानगर
6. दस लाख से अधिक जनसंख्या - मेट्रोपोलिटन नगर
7. पचीस लाख से अधिक जनसंख्या - विशालनगर " [10]

निष्कर्ष :-

अन्ततः हम कह सकते है कि गाँव से नगर और नगर से महानगर की ओर मानव की यात्रा चलती ही जा रही हैं। अनेक नदियाँ जिस प्रकार समुद्र को मिलती है, ठीक उसी प्रकार अनेक गाँवो से अनेक जाति-धर्म के लोग इस महानगर रुपी समुद्र में आकर एक हो रहे हैं। अब महानगर भी मेट्रोपोलिटन नगरों में और मेट्रोपोलिटन नगर विशालनगरों में बदल रहे हैं। समुद्र अपनी जगह से हट रहा है, जंगल कट रहे है, और मानव-प्राणी आकाश की ओर बढनेवाली इमारतों में, पंखे की हवा में रहने की कोशिश कर रहा हैं। रेल की पटरी के किनारे, पुल के नीचे, फुटपाथ पर कीडे-मकोडें की तरह लोग रहने लगे हैं। बम्बई, कलकत्ता जैसे विशालनगरों की आबादी और गंदगी देखने से पता चलता है कि इन महानगरों की बढती हुयी जनसंख्या ने न जाने कितनी समस्याओं का निर्माण किया है। बढती हुई आबादी के साथ-साथ महानगरीय समस्याओं की संख्या भी बढती जा रही हैं। इन समस्याओं में मकानों, यातायात, भीड, अलगाव और परायापन, ऊब और एकरसता, अनिश्चितता, अनैतिक स्त्री-पुरुष सम्बन्ध व्यस्तता, सम्बन्धों की शिथिलता आदि अनेक और विविधांगी महानगरीय समस्याओं का निर्माण हुआ है।

9. **मानवी जीवन और महानगरों का आकर्षण :-**

अपने गाँव, कस्बें और नगरों से महानगरों की ओर आकर्षित होने के अनेक कारण हैं। पहला कारण यह है कि महानगरोंकी चकाचौंध और बाह्य आकर्षन सबको मोह लेता है। गाँव और कस्बे के व्यक्ति को यह धरती का स्वर्ग ही लगने लगता है। वह गाँव की मिट्टी से निकलकर महानगरोंकी साफ- सफाक सडकों पर विचरण करना चाहता है। अपनी झुग्गी-झोपडी से निकलकर आकाश को छुनेवाली इमारतों में रहने के सपने देखता है। वह बैलगाडी को

त्यागकर तेज गति से चलनेवाली ट्रेन में और हवाई-जहाज में बैठना चाहता है। गाँव के नीम और पीपल को छोडकर महानगरों के रंगीन बाग-बगीचों में घूमना चाहता हैं। महानगरों की जाति-पाँति के बंधनरहित वातावरण का मोह उससे त्यागा नहीं जाता। महानगरों की सभ्यता और जीवन-स्तर को त्यागकर वह फिर से अपने गाँव और शहर की ओर जाने का नाम नहीं लेता। दूसरा कारण यह होता है कि गाँव में कृषि का प्राकृतिक प्रकोपों से नुकसान होने से सब जीवनमान अस्थिर होता है और अन्न और पानी की प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए ही मोहताज होना पडता है। महानगरों में इस समस्या का कोई सवाल ही नहीं उठता और लोग महानगरों की सीमित सुविधाओं में भी असीमित सुख की प्राप्ति करते हैं। छोटे-छोटे कस्बों और नगरों में भी मेहनत, मजदूरी की समस्या निर्माण होती है। इसलिए बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि महानगरों की जनसंख्या अपार होती जा रही है। यहाँ पर अनेक छोटी-मोटी नौकरियाँ और व्यवसाय उपलब्ध होते हैं। गाँवो से हटने का तिसरा कारण यह भी है कि सरकार महानगरों में सुविधाओं की बरसात करती है और गाँवो की ओर अवहेलना की दृष्टि से देखा जाता हैं। कपास की खेती करनेवाला किसान नंगा है। गाँव का दूध और सब्जी शहर की ओर भेजनेवाली गाँव की जनता भूखी और प्यासी है। चौथा कारण यह भी हो सकता है कि गाँवो में चोरी और पटेल-साहुकारों के आतंक से डरकर भी लोग महानगरों की ओर बढते है क्योंकि महानगरों में सुरक्षा के अनेक उपाय उपलब्ध हैं और अंतिम कारण हम देख सकते हैं कि महानगरों में क्लब, शराब और मुक्त जिन्दगी जीने के मोह के कारण भी लोग महानगरों की ओर बढ रहे हैं।

निष्कर्ष :-

महानगरीय जीवन का आकर्षण, पानी सिंचाई की कमी के कारण दैवाधीन कृषि व्यवसाय रोजी रोटी के लिए छोटे-मोटे व्यवसायों की उपलब्धी आदि के कारण भी झुग्गी बस्तियाँ बढती हैं।

10. बम्बई में स्थित धारावी झोपडपट्टी में परिवर्तन की हवा ।

श्याम होते ही धारावी में 18-20 नवजवान एक नुक्कड पर इकठ्ठा होते हैं। किसी के हाथ में मेगाफोन होता है, किसी के पास ढोलक तो किसी के पास झांझ। समवेत स्वर में गाने लगते हैं -

"नफरत जो सिखाए वह धर्म तेरा नहीं है,
इन्सां को जो रौंदे वह कदम तेरा नही है,
कुरान न हो जिसमें वह मन्दिर नही तेरा,
गीता न हो जिसमें वो हरम तेरा नही हैं।"

गीत सुनकर बच्चें दौड आते हैं, बडे भी आते हैं। फिर चर्चा होती है। चर्चा कई सवालों पर होती है, कई समस्याओं पर होती है। कैसी धारावी चाहिए धारावी वासियों को? अमनचैनवाली धारावी? या दंगा-फसादवाली धारावी? निरक्षर अंगूठा-छाप धारावी? या पढी-लिखी समझदार धारावी? अपने पैरों पर खडी धारावी या दूसरों का मुँह ताकती धारावी?

चर्चा के दौरान जवाब भी दिए जाते हैं और सपने भी सजाएँ जाते हैं। उनका सपना है साक्षर, समझदार, सक्षम और स्वावलंबी धारावी। उसके बाद यह सवाल भी चर्चा में आता है कि कौन बनायेगा ऐसी धारावी जिसमें दंगें न हो, बेरोजगारी न हो, फटे हाली न हो ---। कुछ नवजवान आगे आते हैं, कहते हैं - हम बनायेंगे।

अब ऐसी श्यामें धारावी के जिंदगी का हिस्सा बनती जा रही हैं। दंगों से आहत धारावी फिर से खडा होने की कोशिश करने लगा है। "धारावी साक्षरता समिति" के बैनर तले "हर एक, हर एक को पढाओं" के कार्यक्रम में जुट गये हैं। एक साल में साढे तीन सौ वयस्कों को इन नवजवानों ने साक्षर बनाया हैं।

साक्षरता अभियान के साथ-ही-साथ यहाँ "पढाई जारी रखो अभियान" भी चलाया जा रहा है। "सावित्री फुले दत्तक पालक योजना" के तहत इन्होंने पिछले साल बाईस लडके-लडकियों को पढाई जारी रखने में मदद की। कई बच्चें ऐसे भी हैं जिनके पिता दंगों में मारे गये हैं। पिता की हत्या के बाद सारी जिम्मेदारी इसी लडके पर आ गयी है ऐसे लडकों को धारावी के इन नवजवानों ने समुहिक तौर पर तय किया कि इसकी पढाई जारी रखें। फिर पोशाक, किताबें आदि से तो मदद की गयी। समय-समय पर मार्गदर्शन भी किया। ऐसे ही गरीब, बेसहारा बच्चों को सावित्रीबाई-फुले दत्तक योजना के तहत पढाया जा रहा हैं।

इन बाईस बच्चें में नौ लडकियाँ भी हैं। तीन मुस्लिम हैं, नौ दलित हैं और एक पिछडी जाति की। धारावी साक्षरता समिति जाति और धर्म की व्यवस्थापर यकीन नहीं करती है। लेकिन मानती है कि जातिविहीन समाज बनाने के लिए दबी जातियों के लोगों को आगे लाने की जरुरत है और धार्मिक तणाव कम करने के लिए हिन्दूओं और मुसलमानों को रोजाना की जिन्दगी में ज्यादा से ज्यादा मिलने-जुलने की जरुरत है। साक्षरता समिति के संयोजक ने बतया कि छात्रों का चुनाव उनकी सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति को मद्दे नजर रखकर किया गया है।

इस बार श्री "सुभाष दत्तक योजना" के तहत दो सौ छात्र - छात्राओं की पढाई का खर्चा उठाना चाह रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि बम्बई के संवेदनशील और सेवाभावी लोग आगे आयेंगे और इस योजना में शामिल होकर एक-एक बच्चे की पढाई में आर्थिक सहयोग देंगे।

गरीब बच्चें ज्यादा महंगी किताबें नहीं खरीद पाते। दूसरी तरफ पढ लेने के बाद

एक छात्र के पास वह किताब बेकार हो जाती है। इसीलिए धारावी के स्कूली छात्रों ने मिलकर सावित्री वाचनालय की स्थापना की है। यहां सभी बच्चें अपनी पढाई पूरी करने के बाद किताबें जमा कर देते हैं। कुछ किताबें दूसरों से मांगकर भी लाते हैं। एक दिन के लिए दस पैसे देकर कोई भी यहाँ से किताब ले जा सकता है। इस वाचनालय में फिलहाल तीन सौ रुपये माहवार जमा हो जाते हैं। यानी एक दिन में 300 बच्चे इस वाचनालय का लाभ उठातें हैं।

जो बच्चें महिने के तीस दिन यहाँ से किताबें लेकर पढता है उसे बढावा देने के लिए पुरस्कृत किया जाता है। पुरस्कार में उसी के जरुरत की कोई चीज दी जाती है। एक सौ रुपये का पुरस्कार दिया जाता हैं। एक सौ रुपये की नयी किताबें खरीदी जाती हैं। एक सौ रुपये व्यवस्थापर खर्च किये जाते हैं। इन बच्चों को यकीन है कि इनका धारावी आज से दस साल बाद इनके सपनों का धारावी बनने लगेगा।

"पर इतना आसान नहीं है यह सहाब जहाँ एक तरफ मुठ्ठीभर नवजवान और कुछ सौ बच्चे बेहतर धारावी के निर्माण में जुटे हुए हैं वही राजनीतिक पार्टियों के लोग इनके काम में बाधा पहुँचाने में कोई कोर-कसर नहीं छोडते। कई स्थानिय नेता इन्हें इस तरह के काम करने से मना करते हैं।"[11]

एशिया खण्ड में सबसे बडी मानी गयी धारावी की झोपडपट्टी यह गुनहगारी, मारा-मारी और जातीय दंगों का केन्द्र समझी जाती है। लेकिन आज-कल अपनी प्रतिमा को बदल देने का इरादा धारावी ने किया है। धारावी में स्थित नारियों ने संघटित होकर धारावी को नशापान से मुक्त करने का प्रयास किया है। सट्टेबाजी, रात की गुण्डई, कैंबरे डान्स आदि बुरे व्यवसाय एक के बाद एक समाप्त हो रहे हैं।

इस वास्तविकता को बदलने के लिए तथा "हातभट्टी" का खेल खेलनेवाले बच्चों को और कोई खेल खेलने के लिए, वहाँ की नारी-संघटनाओं ने अपने प्रयास जारी रखें हैं। प्रमुखतः गैरकानूनी जुगार, इमारतें, गुण्डगिरी, दादागिरी ओर दहशतवाद आदि का साम्राज्य होनेवाली छः लाख लोकसंख्या की झोपडपट्टी में नारियों की संघटनात्मक शक्ति अपना बल जता रही है। शराब के कारण ध्वस्त हुए घरों को इस रुप में आशा का एक किरण दिखाई दे रहा है।

धारावी झोपडपट्टी से सटा हुआ बम्बई का माटुंगा यह उपनगर है, इस माटुंगा में कई वर्ष पूर्व प्रसिध्द गुण्डों का राज था। उसी के साम्राज्य को पुलिस ने आवाहन दिया। उनके गैरकानूनी धन्धें बन्द करने के कार्यवाही में पुलिस ने धारावी के हातभाट्टियों पर छापा डालने शुरु किया। ये शराबी अड्डें गैरकानूनी थे और इनके मालिक भी प्रसिध्द गुण्डों के भाई-बंद थे। इसी अड्डों को बन्द करवाने में पुलिस को बहुत मात्रा में यश मिला। आज धारावी में एक भी भट्टी

नहीं है। अर्थात इसका श्रेय सन 1978 की राजकीय परिस्थिति को मिला, क्योंकि उस वर्ष राज्य में सत्तांतर होने के कारण प्रसिध्द गुण्डों के साम्राज्य को सुरंग लगा।

गैरकानूनी शराबी अड्डे चलानेवाले दादाओं के साथ-साथ और दो-तीन गुण्ड थे, जो गैरकानूनी झोपडपट्टियाँ बाँधकर देना, गैरकानूनी पानी के नल का तावा लेकर पानी विक्री करनेवाले दादाओं का इसमें समावेश था। पुलिसों ने कुप्रसिध्द गुण्डों का साम्राज्य ध्वस्त करने के बाद छोटे-मोटे गुण्डों ने पुलिस के भय से अपने बुरे व्यवसाय छोडकर अन्य व्यवसाय करने का संकल्प किया। गैरकानूनी रुपये हाथ में होने के कारण उन्हें कुछ अडचण महसुस नही हुई। इन्ही लोगों ने आज दूसरें धन्धे में अपना पैसा लगाया है। आज धारावी में गैरकानूनी हातभट्टियाँ नहीं है। लेकिन देशी-विदेशी शराब के अड्डें, होटल है। शासनमान्य सस्ते रेशन के दुकानों के मालिक यही लोग है। इसके साथ-साथ सट्टा, जुगार, रमी, क्लब, कोठा तो है ही लेकिन जोश में है शराब का व्यवसाय। इसे पुलिस का तो वरदहस्त है-ही।

फरवरी, 1994 का दिन धारावी के इतिहास में सुवर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। इस दिन धारावी की झोपडपट्टी में जो घटना घटीत हुई उस घटना से ही गैरकानूनी धन्धें समाप्त करने का मुहूर्त हुआ। घटना इस प्रकार की थी कि - धारावी झोपडपट्टी में शेटवाडी नामक एक भाग है, इसमें शिवसेना का झण्डा लगाया हुआ खंबा किसी ने उखाडकर फेंक दिया/जो होना था वही हुआ, शिवसेना के कार्यकर्ताओं में असंतोष मचा। यह काम किसी मुस्लिम कार्यकताओ का होगा ऐसा गृहीत कर उन्होंने एक मुस्लिम कार्यकर्ता को जबरदस्त मार दे दिया। इसके बदले मुस्लिमों ने शिवसेना के कार्यकर्ताओं के घरों पर पत्थर तथा सोडावॉटर की बोतलों से तुफानी मारा किया। परिस्थिति बिघड गयी। दो गुट में दंगल मची। पुलिसों ने धर-पकड शुरु की और सम्पूर्ण झोपडपट्टी में भय और दहशत का वातावरण फैला। पुलिसों ने इस इलाके के सभी राजकीय पक्षों के झण्डे निकाल दिये। इससे अशांतता और बढी। दिसम्बर 92 और जनवरी 93 में भी धारावी में जातिय दंगें मचे थे। उसके बाद स्थापन की हुई सर्वपक्षिय शांतता समिती में नारियों का बडा सहयोग था। छः फरवरी 1994 के इस घटना के बाद सभी नारियाँ संघाटेत हुई।

शेटवाडी और धारावी के इलाकों में छाया हुआ भय और दहशत को निपटाने के लिए महिलाओं ने कमर कसी। 9 फरवरी, 1994 में पुलिस-नागरिक शांतता-समिती का एक चर्चासत्र हुआ धारावी पुलिस थाने में हुये इस चर्चासत्र में सभी धर्मिय नागरिक और महिलायें हाजिर थी। इसमें सभी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि शेटवाडी में हुऐ दंगे जातीय स्वरुप के न होकर आपसी शत्रुत्व से हुए होंगे। इसके बाद दोनों गुटों में समन्वय स्थापित किया गया।

समन्वय होने के कारण शांतता स्थापित हुई थी और यह मामला इधर ही खत्म होता था, लेकिन महिलाओं को यह सवाल सताता था कि - "ये दंगे क्यो होते है? जब दंगे शुरु हुये

थे तो यह सिध्द हुआ था कि दो बुटों के कार्यकताओं ने शराब पी थी। अंत में महिलाएँ इस निष्कर्ष तक पहुँची कि इस दंगो के पिछे शराब ही एकमात्र कारण है और शुरु हुई अगली कडी विचारमंथन की। धारावी के युवकों को शराबमुक्त करने में क्या यश मिलेगा? उसे लिए क्या करना होगा? इन युवकों का आत्मविश्वास बढाने में हम कामयाब होंगे क्या? आदि अनगिनत सवालों से महिलाओं का मत्था भन्ना उठा। अनेक संघटनाओं की प्रमुख महिलाओं ने मिलकर "धारावी नशाबन्दी समिति" की स्थापना की गयी।

शराब के अड्डों के सामने आंदोलन करके वे बन्द करना, शराबी बार आदि को संमती देनेवाले शासन का धिक्कार करना, और स्कूल, कालेज तथा बगीचें, महिलाओं के बजार केन्द्र आदि शासन से मंजूर करना। इसी तरह त्रिसूत्री का नियोजन किया गया। शराब के कुपरिणाम तथा दाहक अनुभव ने इस योजना को जन्म दिया।

इस महिला समिति ने पूरे धारावी का सर्वेक्षण करके शराब के अड्डें तथा बार की जानकारी प्राप्त की। समिति के कार्यकताओं ने अपना पहला छापा एक प्रसिध्द "बार" पर किया। इस बार में महिलाएँ काम करती थी, इसमें कॅब्रे डान्स भी होते थे, ये बार रात के दो-ढाई बजे तक खुला रहता था। कॅब्रे डान्स के पाश्चात्य संगीत का हुल्ला-गुल्ला माने इस इलाके के छात्रों बिमरियों तथा अबालवृध्दों का एक सिरदर्द बना रहता था। इस लिए महिलाओं ने आंन्दोलन छेडा। "शराबविक्री बन्द करो", "कॅब्रे डान्स नहीं चलेगा" इस प्रकार घोषणाबाजी करके, बार में घुसकर उन्होंने वह बार बन्द करवा दिया। बार के चालक तथा कॅब्रे डान्सर आदि को लेकर ये महिलाएँ पुलिस थाने पर गयी। यह सब कुछ चल रहा था उसमें देखनेवालों ने भी सहयोग दिया। वेटर का काम करनेवाली तीन लडकियों को पकडकर नागरिकों ने कार्यकर्ताओं के हाथ में दे दिया। थोडी ही देर बाद पुलिस की व्हॅन आ गयी। पुलिस अफसरों और कार्यकर्ताओं में चर्चा होने के बाद उन तीन लडकियों को छोड दिया गया। उसके बाद और एक घटना घटीत हुई। पुलिस उपअधिक्षक के पथक का एक बिना वेशधारी पुलिसने एक प्रमुख महिला कार्यकर्ता को गोपनियता रखकर कहा कि "ये मामला इधर ही खत्म करो, क्यों आगे बढाते हो? हम बारवालों से बातचित करके तुम्हारे भी लेन-देन का देख लेंगे।" इस तरह की रिश्वतखोरी को वह महिला बली न पडकर सीधे पुलिस को ही दटाते हुए या डॉटकर कहा "हम यहाँ सौदेबाजी करने नहीं आये, यहाँ के शराबी अड्डें और तुम्हारी रिश्वतें या हप्तें बन्द करने आये हें। इसप्रकार उस महिला की फटकार सुनकर वह पुलिस एक क्षण भी नहीं रुका।

इससे भी भयानक घटना पुलिस थाने में घटित हुई। बार के मॅनेजर को पुलिसों ने

बैठने के लिए खुर्सी दी और महिला निरीक्षकों को लाठी से बाहर निकालने का प्रयास किया गया, गालि-गलौज भी की। महिलाओं ने शोर-शराबा करने के बाद उनका निवेदन पत्र पुलिसों ने स्वीकार किया। रात के आठ बजे के बाद बार शुरु रखना, अर्ध-नग्नावस्था में कॅब्रे डान्स चलाना, बस्ती में कर्ण-कर्कश्य संगीत के कारण शांतताका भंग करना आदि अपराध में बार के मॅनेजर को अटक की जाय, उसपर मुकदमा दायर किया जाय और उसका मुकदमा जब तक चलता रहे तब तक बार को सील लगाया जाय। परिस्थितिवश या मजबुरीवश कॅब्रे-डान्स करनेवाली महिलाओं को छोड दिया जाय। आदि निवेदन-पत्र में कुछ प्रमुख शर्ते थी। पुलिसों ने कॅब्रे-डान्सर को तो छोड दिया, लेकिन बार के मॅनेजर को भी छोड दिया। वह "बार" भी दूसरे दिन पहले की तरह जोश से ही शुरु हुआ।

महिला कार्यकर्ताओं को यह समाचार मिलते ही वे अतिरिक्त पुलिस आयुक्त से मिले और कहा कि - "इस "बार" में चले गैरकानूनी धन्धे बन्द न हुए तो हम कानून हाथ में लेकर वह बार बन्द कर देंगे। इसप्रकार का आवाहन दिया गया। आज वह बार बन्द है। इस पहली मोहिम को यश मिला।

धारावी इलाके में ज्योतिनगर नामक बस्ती है। इस बस्ती के ऊपर से ही टाटा इलेक्ट्रीक कंपनी की उच्चदाबवाली विद्युततारएँ निकल जाती है, उसमें से अगर एक भी तार टूटी तो सम्पूर्ण झोपडपट्टी जलकर भस्म हो सकती है। ज्योतिनगरवासियों के सिर पर यह भयानक टेन्शन तो होता ही है लेकिन उससे भी भयानक टेन्शन है अपने शराबी पति का। इस इलाके की सभी महिलाएँ इधर-उधर के घरों में चौका-बर्तन माँजने का काम करती है। दिन-भर वे थककर घर आती है तो उनका स्वागत करने शराबी पति सामने हाजिर होता है। उसके बाद गालि-गलौज, मार-पीट होती ही है। इस सभी झंझटों से मुक्त होने के लिए महिलाओं ने शराबी अड्डें ही खत्म करने का इरादा किया।

20 फरवरी, 1994 को कुछ महिलाएँ इकठ्ठा होकर "धारावी नशाबन्दी समिति" के कार्यकर्ताओं के साथ उन्होंने विचार-विनिमय किया और अपनी-अपनी समस्याएँ उन्होंने कार्यकर्ताओं के सामने व्यक्त की। जिस पहले अड्डें छापा डालने का इरादा किया वह अड्डा ही दो महिलाओं का है यह शाबित हुआ। उन दो महिलाओं को शराब के बर्तन के साथ पुलिस थाने में लिया गया। वहाँ पर पुलिस हमारा आगत-स्वागत करेंगी, ऐसी आशा थी लेकिन वहाँ कुछ और ही घटीत हुआ। पुलिस थाने के थानेदार ने कार्यकर्ताओं को ही धमकाया। "तुम्हे कुछ सवलतें दी तो तुम बहुत ही आगे बढ गयी हो, तुम्हें तो देखना ही होगा।" इसप्रकार धमकाने के अपने इस ॲक्शन से कार्यकर्ताओं में डर छायेगा ऐसा थानेदार को लगा, लेकिन उनका अंदाज चुक गया। एक

कार्यकर्ती उन्हीं पर डाँटकर कहने लगीं - "साहब, तुम और आगे बढकर क्या करोगे? हवालात में बंद करोगे, इतना ही न। हम भी देख लेंगे कि हमारी महिला संघटना बडी है या तुम्हारी हवालातें।" इसपर थानेदार हडबडा गये। उन्होंने कहा - "तुम्हारा जो कुछ भी कहना हो तो लिखकर दो।" इतना होकर भी महिलाओं ने फिर बताया कि "हम हमारा कहना तो लिख देंगे ही मगर तुम धारावी के शराब बिक्री करनेवालों की जाँच-पडताल करें।"

कार्यकर्ताओं ने जिस महिलाओं को शराब बेचते समय पकड लिया था उनकी जानकारी प्राप्त करते हुए समझ गया कि एक के पति का अंत हुआ है और बच्चों की पढाई चल रही है। इस तरह के सवाल पैदा होंगे, इसकी जानकारी इन कार्यकर्ताओं को न थी। फिर भी इस आन्दोलन को आगे बढाने के लिए किसी भी समस्या को हल करके आंदोलन सक्षम बनाने का वादा किया। उस पकडी हुई औरत को पूछा गया कि तुम्हारी घर-गिरस्ती चलाने के लिए तुम दूसरों के घरों को क्यों ध्वस्त करती हो। उसे बताया गया कि "हम तुम्हें कुछ मदद करेंगे। अब वह औरत माणियों की मालाएँ तैयार कर, बेचकर अपना घर चलाती है।

धारावी इलाके में अण्णानगर, कर्वेनगर, इंदिरानगर, मुस्लिमनगर, सोशलनगर, 90 फुटी रास्ता आदि इलाकों में इसप्रकार के आंदोलन चल रहे हैं। खुशी की बात यह है कि महिलाओं की संख्या इस आंदोलन में बढ रही है और आस-पास के नगरजनों का उन्हें प्रतिसाद या सहयोग मिल रहा हैं। पिछले दो-ढाई बरस में इस इलाके के 30 शराबी अड्डें बंद करने में उनको यश मिला है।

"धारावी नशाबन्दी समिति" का यह आन्दोलन पुलिस की धमाकियों से बंद नहीं हो पा रहा है यह बात ध्यान में आते ही बार - चालकों ने महिला-नेताओं को रिश्वतें जैसे लालच दिखाने का प्रयास किया। समिति की एक प्रमुख महिला कार्यकर्ता के घर अनेक 'बार' के मालिक तथा बार-चालक गये और कहने लगे - "जो चाहिए वह लीजिए और यह मामला इधर ही खत्म कर दीजिए।" इस बात को सुनकर उस महिलाने पाव से जुता निकालकर कहा - "यहाँ से चले जाओ, वर्ना जुते से मार-मारकर निकाल दूँगी।" इसप्रकार किसी भी रिश्वतखोरी को ये महिलाएँ स्थान नहीं देती, इसीकारण इस इलाके के बार-चालक चिंतओं से ग्रस्त हैं।

धारावी में शराबबिक्री बंद हुई है, फिर भी बाहर से शराब पीकर आनेवालों की संख्या कुछ कम नहीं है। उसके लिए "व्यसनमुक्ति" आन्दोलन की आवश्यकता महसूस होने लगी है। इसलिए "धारावी नशाबन्दी समिति" ने 19 मार्च को शराबबन्दी मेलावे का आयोजन किया। "व्यसनमुक्ति" इस संघटना के लिए काम करनेवाले "कृपा फाऊंडेशन" के सुषमा तेंडुलकर और उनके अन्य कार्यकर्ताओं को इस समारोह में निमंत्रित किया गया। इस संघटना से सम्बन्धित फिल्म

तारका तथा "स्त्रीमुक्ति संघटना" की राज्य महिला आयोग की सदस्या, और इस संघटना के लिए कार्य करनेवाले अनेक नेताओं ने इस समारोह में भाषण किया।

धारावी में कुलमिलकर 150 अंगणबाडियाँ है और जनवादी महिला समिति तथा अन्य समितियों व्दारा बालवाडी जैसे कार्यक्रम होते रहते हैं। इन सभी समितियों का संघटन करके यह आन्दोलन और अधिक व्यापक बनाना होगा।

जुगार भी बंद हुए :-

शासन का खेतीसम्बन्धि अविकासात्मक नियोजन, ग्रामविकास में अनदेखापन, निसर्ग की विषमता के कारण आवर्षण आदि कारणवश राज्य में भूमिहीनों की संख्या दिन-ब-दिन बढती ही जाती है, ऐसे निर्वासितों के लिए आधार मिलता है तो धारावी जैसे झोपडपट्टी में। बम्बई में आकर सभी को नौकरी मिलती है ऐसा नही। कुछ काम मिला तो मजदूरी कम मिलती है। सस्ते मनोरंजन के लिए ये गरीब मजदूर शराब की छाह लेता है। दिन भर काम करके कुछ मिली हुई धनराशी इन गुत्तेवालों के जेब में डालते हैं। इन पैसों में उसे जो शराब मिलती है वह इतनी हानिकारक होती है कि उस मजूर की कार्यक्षमता दिन-ब-दिन घटती जाती है और उसके परिणामस्वरुप कम काम अथवा पूर्णतः बेकारी आदि समस्याएँ पैदा होती है। आय कम होने के कारण शराब की आदत तो छुटती नहीं लेकिन पैसे कमाने के लिए ये लोग जुगार खेलने के लिए मजबूर होते है।

धारावी में जुगार के सौ-सौ अड्डे थे। इनमें "तीन पानी पत्ता" से "सट्टा बाजार" "रश्मी", "क्लब" और "पताडा" नामक तक सर्रास जुगार चलता है। धारावी के हर गली में "आकडा बाजार" तेजी में चलता है। मजदूरी करनेवाले तथा व्यसनों में फँसे हुए आदमी चार पैसे जुटाने के बाद इन अडडों की तरफ मुडता है। तकदीर ने साथ दी तो कभी-कभी पैसे मिलते है। लेकिन जो जीत गया है उसे अड्डेवालें दादा लोग मार-पीट भी करते हैं। कई वर्ष पुर्व एक आदमी ने मटके पर सौ रुपये लगाये थे। मटके कीपरिभाषा में जिसे "तिकडम" कहते हे उसी प्रकार वह खेला था और जीत भी गया था। उसे लाख के आस-पास रुपये मिलना अपेक्षित था, लेकिन मटका चलानेवाले दादाने उसे पैसे तो नही दिये लेकिन उससे मटके का नंबरवाला कागज लेकर उसे खत्म कर दिया।

इन पारम्परिक जुगार के साथ-साथ धारावी में "व्हिडिओ गेम्स" का जुगार भी चलता था। धारावी में ब्लू फिल्मस दिखानेवाली व्हिडिओ थिएटर्स भी थे ये सबकुछ खुले आम चलता था।

धारावी नशाबन्दी समिति के कार्यकर्त्या महिलाओं ने शराबबंदी आन्दोलन शुरु करने के बाद इन महिलाओं के डर से व्हिडिओवालों ने अपना धन्धा पूर्णतः तो नहीं लेकिन अंशतः कम

किया। इन धन्धों को पुर्णतः बन्द करवाने की जिम्मेदारी इन महिलाओं की ही है। शराबी अड्डों की तरह यह जुगारी अड्डे भी पुलिसों के ही आशिष से चलते है, यह भी ध्यान देने योग्य बात हे।

"माहीमची खाडी" "चक्र" आदि मराठी उपन्यासों के कारण साहित्य में अजरामर हुई "चक्र", "धारावी", आदि फिल्मों से समीक्षकों, दर्शकों को ज्ञात हुई यह "धारावी झोपडपट्टी"। आज वहाँ एक प्रात्यक्षिक घटीत हो रहा है। स्त्री-शांक्ति की संघटना से यहाँ एक नया आशावाद निर्माण हुआ है। सवाल यह हे कि इससे हम कुछ बोध लेते है या नही। क्योंकि धारावी के अतिरिक्त बम्बई के हर एक उपनगरों में झोपडपट्टियाँ है। जहाँ झोपडपट्टी नहीं है, ऐसे दूर रहनेवाले उपनगरों के मध्यवर्गिय भी इन बुरें आदतों के शिकार बने हुए हैं। मध्य रेल के घाटकोपर, कांजूरमार्ग से मुलुंड तक और पश्चिम रेल के गोरेगाव से सीधा नालासोपारा - विरार तक शराबी अड्डें होने के संकेत मिलते है। यहाँ के शराबियों का क्या करेंगे? धारावी के उपेक्षित तथा अशिक्षित महिलाओं ने जो धैर्य दिखाया वह धैर्य उच्चाशिक्षित मध्यवर्गिय महिला दिखा सकेगी? बम्बई और उनकी उपनगरें ही क्यो? विद्या या शिक्षा के क्षेत्र में अग्रेसर होनेवाले पुना में भी यही चित्र है। बम्बई-पुना के साथ-साथ कोल्हापूर, सातारा, औरंगाबाद, नासिक आदि औद्योगिक दृष्टियों से प्रगत शहरों का भी इस सन्दर्भ में विचार करना अनिवार्य है। सुदैव से इन शहरों की स्थिति बम्बई- पुना जैसी हाथों से बाहर नहीं गयी है। इसका फायदा समाजसेवा-भावी संस्थाओं ने लेना आवश्यक है।

धारावी का गुनगान गाने के बजाय इन कोशिशों का ठोस रुप से अनुकरण किस प्रकार किया जाय इसका विचार-विमर्श करना अनिवार्य तथा आवश्यंभावी है।

"धारावी झोपडपट्टी की जनसंख्या पाँच से छः लाख तक है। निर्यात होनेवाले तैयार कपडों से लेकर मिट्टी के बर्तन तक सब कुछ यहाँ तैय्यार होता हे। इन तैय्यार कपडों के धन्धों में उत्तर हिन्दूस्थान के मुस्लिम और तामिलनाडू के हिन्दू नागरिकों की संख्या बहुत है। चर्म की वस्तुएँ बनानेवालों में महाराष्ट्र के ढोर और चर्मकार जातियों की "मोनोपॉली" है। धारावी के कपडा तथा रेशन आदि व्यापारी पेठों पर गुजराती समाज का प्रभाव हे। स्वयं रंग बनानेवाले राजस्थान के वाघरी लोग भी इधर है। साफ-सुथरे का काम करनेवाले वाल्मिकी समाज के लोग जैसे यहाँ है वैसे ही बन्दरों का खेल करनेवाले, भीख माँगकर जीनेवाले मदारी भी है। (अचरज की बात हे कि ये मदारी अब साहुकारी करके मब्बर हुए है) गोंधली हैं, डवरी हैं, बौध्द हैं सारांश सभी प्रांत के, सभी जाति-धर्मों के लोग यहाँ रहते हैं। संक्षिप्त में कहना होगा तो धारावी याने "मिनी भारत" है। इसी मिनी भारत में शराब-मुक्ती आन्दोलन यश के शिखर पर हे यही स्मरणीय तथा स्पृणीय सूत्र हे।"[12]

निष्कर्ष :-

स्पष्ट है कि अब एशिया खंड की सबसे बडी झोपडपट्टी स्वयंसेवी महिला संगठनों, श्रमिक संगठनों, युवक संगठनों के कारण विकसित हो रही है।

।।. चुनावी - राजनीति में झुग्गी - झोपडियों का योगदान :-

लोकसभा या विधानसभा चुनावों में सभी उम्मीदवार झुग्गी-झोपडीवासियों के मतदाताओं को रिझाने में लगते हैं। इन बस्तियों को पोस्टर, झण्डे तथा बैनरों से सजाने की होड लगी रहती है। जिस पार्टी के जितने अधिक झण्डे यहाँ लगे हैं, उसका उतना ही अधिक जोर इन बस्तियों में माना जा रहा है।

दिल्ली में लगभग चौदह-सौ झुग्गी-झोपडी बस्तियाँ हैं। दिल्ली के सभी विधानसभा क्षेत्रों में इनका वजूद है। इस बार विधानसभा क्षेत्रों में मतों की संख्या एक लाख या उसके आस-पास है। किसी-किसी चुनाव-क्षेत्र में झुग्गी-वासियों के मतों का प्रतिशत काफी अधिक है। इसलिए उम्मीदवार के विजय में इनके मतों की भूमिका अहम् है। इन्हीं के मतों के आधार पर ही उम्मीदवार की जीत या हार होगी। इनकी महत्ता को देखते हुए सभी उम्मीदवार झुग्गी-झोपडी बस्तियों के लिए आकर्षक कार्यक्रम और नारे तैयार कर रहें हैं। इन कार्यक्रमों में उन्हें पक्के मकान देना, स्थायी रुप से बसाना, शौचालयों का प्रबंध करना, बिजली-पानी की समुचित व्यवस्था करना आदि प्रमुख आमिश दिखाते है। कई उम्मीदवार तो झोपडियों के स्थान पर बहुमंजिले भवन बनवाकर उनमें बसाने के आश्वासन भी देते देखे गये हैं, लेकिन ज्यादातर मतदाता राजनीतिक दृष्टि से जागरुक हैं।

पहले की तरह इस बार भी झुग्गी-झोपडी बस्तियों के मतों पर काँग्रेस अपना दावा जता रही है। कई बस्तियों में काँग्रेस के झण्डे बडी मात्रा में लहरातें नजर आ रहें हैं। "झंण्डें तो पार्टी के लोग लगा गये हैं। उन्हें ऐसा करने से रोलकर हम झगडा तो मोल ले नहीं सकते। जहाँ तक वोट देने का प्रश्न है सो जो जहाँ चाहेगा वहाँ वोट देगा।"[13]

एक अन्य झुग्गी-बस्ती में एक भी झण्डा न देख कुछ आश्चर्य हुआ। वहा भी एक मजदूर का कहना था साहबजी हमारे लिए सभी राजनीतिक पार्टियाँ समान हैं। "सभी हमारे उत्थान की बात कह रहीं है। हम जानते है कि जीत के बाद वह हमारे लिए क्या करेंगी? यह आश्वासन हम पहली बार नहीं सुन रहें, हर चुनाव में सुनतें आये हैं। जीत जाने के बाद सब भूल जाते हैं। इसलिए हम किसी पार्टी से बिगाड कर नहीं चलना चाहतें। पता नहीं कौनसी पार्टी जीत जायें? हम भी सभी पार्टियों को वोट देने का आश्वासन दे रहे हैं। किसी को नाराज नहीं कर रहें। वैसे सभी पार्टियों ने हमारी झुग्गियों पर अपने झण्डे लगाने के लिए जोर दिया है,

लेकिन अभी तक हमने किसी पार्टी के झण्डे नहीं लगाये हैं, अलबत्ता कुछ बैनर अवश्य लगे हैं यहाँ।[14] उसकी इस बात ने एक चीज़ तो साफ कर दी कि झुग्गी बस्ती में रहनेवाला मतदाता भी काफी जागरुक है। वह भी अपने भले बुरे की पहचान रखता है। अपने घाटे या लाभ के बारे में सोच रहा हैं।

अब आयी एक उम्मीदवार की बारी। जब उसके सामने झुग्गी बस्तियों की वोटों का हवाला दिया तो वह भावुक हो उठे। उसने झुग्गी बस्ती में रहनेवालों के नारकीय जीवन पर बहुत कुछ कह डाला और बाद में असली राह पर आते हुए बोले : "सच्ची बात तो यह है कि झुग्गी बस्तियों के मत ही निर्णायक है। इनको जो रिझा गया वही विधानसभा में समझो पहुँच गया। अब तुम ही बताओ इन्हें निग्लेक्ट कैसे कर दें। इनको आकर्षक कार्यक्रम और नारे नहीं देंगे तो इन्हें अपने पक्ष में कैसे करेंगे। इन पर साम, दाम, दण्ड सभी हथकंडे अपनाने होंगे।"[15]

मतों के गणित और समीकरणों पर एक शिक्षक ने दिल्ली में विधानसभा बनाये जाने तथा इसके चुनाव होने पर तो संतोष व्यक्त किया, लेकिन उन्होंने उम्मीदवारों पर अपनी नाराजगी भी जाहीर की। उनका कहना था कि विधानसभा का चुनाव हर वर्ग का न होकर एक खास वर्ग का बनकर रह गया है। सभी उम्मीदवार झुग्गी बस्तियों में सुधार की बात कर रहे हैं। उनकी वोट हासिल करने के लिए उन्हें तरह-तरह के सपने दिखाकर अपना ज्यादा समय इन्हीं पर लगा रहे हैं। लग रहा है जैसे अन्य दिल्ली वासियों की कोई समस्या ही नहीं। उनके वोटों से इन्हें कोई सरोकार ही नहीं है। पार्टियों के घोषणापत्रों में भी ज्यादा ध्यान निम्न वर्ग की ओर दिया गया है। मेरे ख्याल से चुनावों को वर्गों में बाँट दिया गया है।

इसी सम्बन्ध में एक आलीशान कोठी में रहनेवाले एक व्यक्ति का ध्यान काँग्रेस के घोषणा-पत्र की ओर दिलाया जिसमें व्यापारियों को विशेष रियायत की बात कही गयी है तो वह भडक उठे, कहा उन्होंने मेरी कोठी के बगल में पार्क की भूमि पर बनी झुग्गी बस्ती को देखो। जिसने हमारे लिए अनकों समस्याएँ खडी कर दी हैं। कितनी बार प्रशासन और नेताओं से इन्हें हटाने के लिए अनुरोध किया जा चुका है, लेकिन कोई सुनता ही नहीं। अब चुनावों में सभी दल उन्हें हटाना तो दूर स्थायी करने की बात कर रहे हैं। जिस कॉलोनी में एक मीटर जमीन के हजारों रुपये दाम हैं, वही प्रशासन और नेताओं की मिलीभगत से ये झुग्गी-बस्तियाँ पार्क की भूमि पर बसायी गयी हैं। उस व्यक्ति ने कहा कि पुलिस और नेता इन्हें बसाने में लगे रहते हैं और अब यही लोग इन नेताओं के वोट बैंक बने हुए हैं। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने छज्जे को एक फूट आगे बढा लिया तो प्रशासन का नोटिस आ गया। पैसे उगाही के लिए अधिकारी चक्कर काटने लगे। अब तुम्ही बताओं इन चुनावों का हमारे लिए क्या औचित्य है। ये चुनाव खास वर्ग

का बनकर रह गये हैं। उसी वर्ग को उम्मीदवार निर्णायक मानतें हैं।

निष्कर्ष :-

चुनावी - राजनीति में झोपडपाट्टियों का योगदान केवल दिल्ली की झुग्गी-बस्तियों तक ही सीमित नही हैं। बम्बई कलकत्ता की झुग्गियाँ भी इसके लिए अपवाद नहीं हैं। इन लोगोंके वोटों को प्राप्त करने के लिए सरकार वहाँ के अवैध धंधों को प्रश्रय : दे रही हे जिससे महानगरीय जनजीवन धोखे में आ गया है।

12. बम्बई महानगर और झोपडपट्टी निर्मूलन अभियान :-

नई बम्बई झोपडपट्टी विहीन विश्व का पहला शहर होगा। यहाँ पर एक भी झोपडा नही होगा और न ही कोई व्यक्ति झोपडें में रहेगा।

वाशी को तो पूर्णरुपेण सेक्टर में विभाजित कर दिया गया है। यही कारण हे कि वाशी में झोपडा बनाने के लिए कोई जगह ही नहीं रह गयी। जब जगह नही है तो नये झोपडें बनने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

सर्वेक्षण के अनुसार बेलापुर, नेरुल, तुर्भे और कोपरखैरन गाँव में कुल करीब छः हजार तीन सौ झोपडें थे, जिनमें से करीब चार हजार झोपडें तोड दिये गये हैं।

झोपडावासियों को पक्के आवास की सोच का जन्म मानवीय आधारपर हुआ है। बीस साल पहले नयी बम्बई उजाड थी। न सडक थी और न ही मकान थे। असली बम्बई, पुरानी बम्बई के बोझ को हल्का करने के लिए नयी बम्बई के निर्माण की परिकल्पना की गयी। नयी बम्बई बसी और अब तो उसका काफी नाम हो गया है।

अब तो गाडी भी चल गयी हे और विश्व के स्टेशनों की तुलना में अच्छे से अच्छे स्टेशन नयी बम्बई में बन गये हैं।

नयी बम्बई आबाद करनेवालों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए ही झोपडावासियों को सर्व सुविधा सम्पन्न आवास देने का निर्णय किया गया हे। झोपडों में वे मजदूर अपने बाल-बच्चों के साथ रह रहें है जिन्होंने नयी बम्बई को इस स्थिति में पहुँचाया है।

कहा जा रहा है कि अब जब नयी बम्बई में अप्रवासी भारतीय रुचि ले रहे हैं और वह सुन्दर से अतिसुन्दर बनने जा रही है, तो उन लोगों को वहाँ से क्यों हटाया जाये, जिन्होंने अपने श्रम, खून, पसीने से नयी सृष्टि का निर्माण किया हैं।

झोपडावासियों को पक्के आवास देने की योजना को केन्द्रिय नगरविकास मंत्री ने सिध्दांत रुप में स्वीकार कर लिया गया है। महाराष्ट्र के भी कुछ नेताओं ने इस सम्बन्ध में राज्य के नगरविकास मंत्री से चर्चा की हे और उन्होंने योजना पर सहमति व्यक्त कर दी है।

महाराष्ट्र के नगरविकास सचिव टी.टी.जोसेफ योजना को अमली जामा पहनाने के लिए कार्यरत है। अब नयी सरकार इस सपने को साकार बनाने में कार्यरत है।

झोप डावासियों को पक्के आवास देने के लिए सिडको से 40 एकड विकसित भूखण्ड की मांग की गयी है। भूखण्ड मिल जाने पर आवास निर्माण कार्य आरंभ कर दिया जायेगा।

'आवास विकास निगम' ने हर पक्के आवास के लिए 25 हजार रुपये का ऋण देना स्वीकार कर लिया है। 25 हजार रुपये बीस वर्षो में वापस करने होंगे। ऋण पर सात से आठ प्रतिशत ब्याज लिया जायेगा। हर आवास 15 वर्ग मीटर का होगा। 15 वर्ग मीटर का यह आवास अपने आप में पूर्ण होगा। इसमें रसोई-घर, बाथरुम की सुविधा रहेगी।

एक किस्म से झोपडावासियों की उनकी अलग कालोनी बनायी जा रही है। विश्व बैंक की ओर से कालोनी में कम्युनिटी हाल बनाया जायेगा। मनोरंजन पार्क की सुविधा रहेगी। एक छोटा अस्पताल रहेगा। उद्यान का भी प्रावधान है। बच्चों के लिए मनोरंजन पार्क रहेगा। माध्यमिक स्तर तक पढाई की सुविधा भी प्रदान की जायेगी।

'मानखुर्द-बेलापुर रेल लाइन की दक्षिण ओर मूल गाँववालों के जो झोपडे थे वहां पर तो सिडको ने नियोजित ढंग से पहले से ही पक्के आवासों का निर्माण आरम्भ कर दिया है। बहुत से आवासों का निर्माण कार्य पूरा हो गया है और उनमें लोग रहने भी लगे है। शेष आवासों का निर्माण कार्य भी शीघ्र ही पूरा हो जायेगा।'[10]

निष्कर्ष :-

महानगरीय झोपडपट्टी का निर्मूलन करके सरकार उन्हें पक्के आवासस्थान देकर महानगरों में स्थित इस कोढ पर प्रतिबंध लगा रही है।

13. महानगरीय जनजीवन की समस्याएँ : एक अवलोकन :-

वर्तमान युग में देखा जा सकता है कि महानगरों का जीवन तेज और गतिशील बनता जा रहा है। यहाँ संघर्ष और गति ही जीवन का दूसरा नाम है। 1950 के बाद के उपन्यासों में ग्रामीण और कस्बाई जीवनचित्रण के साथ-साथ महानगरीय जीवन का चित्रण भी प्रमुख रुप से हुआ है। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, लखनऊ, कानपुर, जमशेदपुर, अहमदाबाद जैसे अनेक शहर हैं, जो अनेक उपन्यासकारों की चेतना पर छाये रहे हैं। फिर भी भारतीय हिन्दी उपन्यास साहित्य बम्बई, दिल्ली और कलकत्ता आदि महानगरों के इर्द-गिर्द ही घूमता है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में हम देख सकते है कि बडी तेजी से महानगरों का और महानगरों में जनसंख्या का दबाव बढता ही जा रहा है। परिणामस्वरुप महानगरों का जीवन व्यस्त बनता जा रहा है और व्यक्ति के निकट के सम्बन्धों में भी तनाव और टूटन की स्थितियाँ बनती जा रही हैं। महानगरों की भीड, कोलाहल और भाग-दौड में उलझा हुआ व्यक्ति अपरिचय, अकेलापन, खुदगर्जी

और अनात्मीयता का शिकार बनता जा रहा है। कृत्रिमता और यांत्रिकताने मनुष्य को भी एक मशीन ही बना डाला है। अपने स्वार्थ की सिध्दि के लिए महानगरों में आदमी कुछ भी करने के लिए तैयार दिखाई देता है और अनेक मुखौटे पहनकर वह अपनी असलियत को छिपाने का प्रयत्न करता रहता है।

महानगरों की बढती हुयी जनसंख्या को रोकना असम्भव सा हो गया है। अपने गाँव, कस्बें और नगरों से नौकरी और उच्च-शिक्षा के हेतु आनेवाले नवयुवकों की संख्या काफी है। बढते हुए उद्योगों ने अनेक छोटे-मोटे व्यापारियों और अनगिनत मजदूरों को महानगरों की ओर आकर्षित किया है। कलाकारों और लेखकों का भी ताँता महानगरों की ओर ही बढता दिखाई देता है। परिणामस्वरुप आधुनिक उपन्यासों में महानगरीय जीवन के अच्छे-बुरे पहलू हमारे सम्मुख उपस्थित होते दिखाई देते है।

१. महानगरों में अपने लोग, अपना गाँव, कस्बे का परिवेश और जीवन-मूल्य छूटने का दर्द:

स्वतंत्रता के बाद के वर्षो में महानगरों में अनेक समस्याएँ अपने भयंकर और विकराल रुप में सामने आयीं। इनमें पहली समस्या थी बेहिसाब में बढनेवाली आबादी। अपनी रोजी-रोटी की तलाश में और कुछ पैसे कमाने के हेतु सभी वर्ग के लोग महानगरों की ओर बढते गये। इसमें भी शिक्षित नवयुवकों की संख्या काफी है जो उपाधि प्राप्त करके नौकरी के लिए या उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के लिए महानगरों की ओर दौडते हैं। कम शिक्षा प्राप्त लोगों के लिए भी महानगरों में अनेक काम थे, इसलिए शिक्षित, अशिक्षित नवयुवक-युवतियाँ, व्यापारी, लेखक आदि सभी वर्ग के लोगों का महानगरों की ओर जाना अनवरत शुरु है। नौकरी या आजीविका की तलाश में महानगरों में आनेवाले अनेक युवकों के सपने चूर-चूर हो गये हैं, क्योंकि यहाँ महानगरों में आने के बाद इस विचित्र परिवेश से वे एकरुप न हो सके। शरीर से महानगरों में रहनेवाले अनेकों का मन अपने गाँव और कस्बे के वातावरण को ढूँढता है और कुछ क्षणों के लिए सही इस महानगरीय वातावरण को भूलकर वे मन से अपने गाँव की ओर भटकते हैं। गाँव और कस्बे की संस्कृति और परिवेश से महानगरीय जीवन बिल्कूल अलग ढंग का होता है। गाँव और कस्बे से आनेवाला कोई भी व्यक्ति इस घुटनेभरे माहौल में एकरुप नहीं हो सकता। वह बार-बार अपना गाँव, अपने लोग और अपने परिवेश से तुलना करता हुआ तडपता रहता हैं।

२. महानगरों में मकान की समस्या और गन्दी बस्तियों का चित्रण :-

महानगरों की भीड तथा कोलाहल भरी जिन्दगी और यातायात की समस्याओं के बाद मकानों की समस्या सबसे गंभीर बनती है। आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में इस समस्या का चित्रण अति भयावह स्थिति के साथ मुखर हुआ है। आधुनिक उपन्यासों में महानगर सम्बन्धि अनेक सन्दर्भ

दिखाई देते हैं। नौकरी और पेट-पालन की समस्या तो यहाँ हल होती है, लेकिन मकान मिलना मुश्किल होता है। मकान मिलता भी है तो दूर-दूर तक उपनगरों में जाकर रहना पडता है और फिर यातायात की समस्या का सामना करना पडता हैं। मकान मालिक और किरायेदारों की चर्चा तो अलग रुप से की जा सकती है। छोटी-छोटी दडबेनुमा खोलेयाँ और चालों का वर्णन भी इन उपन्यासों में मिलता हैं। आधुनिक उपन्यासों में महानगरों की चकाचौंध और ऊँची-ऊँचीवातानुकूलित इमारतों के साथ-साथ गंदी बस्तियों (slums) का भी चित्रण हुआ है। जहाँ कीडे-मकोडे की तरह लोग जीवन व्यतीत करते हैं। झुग्गी-झोपाडियों की गन्दगी और सडांध का वर्णन भी यहाँ दिखाई देता है। औद्योगिक विकास और बढनेवाले व्यापार के परिणामस्वरुप यहाँ मजदूरों और नौकरों के रुप में आनेवाली जनता को जगह देने के प्रयास में समुद्र पिछे हट रहा है और इमारतें आकाश को छुने लगी हैं। मकान के आभाव में हजारों की संख्या में मजदूर फुटपाथ पर सोते हैं और किसी तरह रात काट देते हैं।

3. **महानगरों में यातायात की समस्या :-**

महानगरों की बढती हुई अपार जनसंख्या के कारण नौकरी-मकान के साथ-साथ सबसे भयंकर समस्या बन जाती है यातायात की। इस यातायात की समस्या के कारण आदमी को अपने घर तक पहुँचने के लिए बहुत सारा समय रेल, बस और बस-स्टॅण्डों पर बिताना पडता हैं। महानगरों में हर किसी को, हर समय कही न कही जाना होता है। रेल, बस, टैक्सी, स्कूटर आदि अनेक साधनोंव्दारा हर व्यक्ति को जल्दी में जाते हुए हम देख सकते हैं। युवक-युवतियों के साथ-साथ बुढे और बच्चों को भी, यहाँ तक अंधों और अपंगों को भी इस समस्या का सामना करना पडता है। घर से प्रातःकाल में बच्चे उठने से पहले घर से बाहर जानेवाले नौकरी-पेशा लोग रात-अंधेरे में ही घर पहुँचते हैं। उनके जीवन का अधिकांश समय सफर में ही व्यतित होता है।

4. **महानगरों में आर्थिक तंगी :-**

आर्थिक तंगी की समस्या बडे-बडे महानगरों की आम समस्या है। मेहनत, मजदूरी करनेवाला व्यक्ति हो या किसी कार्यालय में काम करनेवाला क्लर्क, अफसर हो या अध्यापक, धनी हो या निर्धन सब के सब आर्थिक अभाव के कारण विवश हैं। मिलनेवाली तनख्वाह चाहे कितनी भी क्यों न हो, सब मकान किराया, यातायात और अनेक आवश्यक सुविधाएँ जुटाने में खर्च होती हैं। कमाऊ पत्नी हो तो खर्च करने में हाथ थोडा ढीला रह सकता है अन्यथा महिने में एक बार मिलनेवाली तनख्वाह एक-दो दिन में ही रोजी-रोटी और अन्य अत्यावश्यक चीजें जुटाने में खर्च होती हैं। गाँव में अगर बुढे माता-पिता हो तो उन्हें अलग से पैसा भेजना ही पडता है। छोटे भाई-बहनों की जिम्मेदारियाँ हो तो महानगरों में खर्चे का क्या कहना! महानगरों में चाहे

मध्यवर्गीय व्यक्ति हो या उच्चवर्गीय, सब को आर्थिक तंगी के साथ जूझना पडता है, तो निम्नवर्गियों का क्या कहना। इनके इर्द-गिर्द तो आर्थिक तंगी-ही-तंगी। "अर्थ" की मजबूरियों में घिरा महानगरीय व्यक्ति बार-बार दृष्टिगत होता है। आर्थिक विषमता के कारण निर्मित अनेक परेशानियाँ, कटुता और विषमता आदि चित्रण हमें देखने को मिलता है।

5. महानगरों में अर्थकेन्द्रित रिश्तें :-

सुविधा और सुरक्षा के हेतु गाँव से अनेक लोग शिक्षित अशिक्षित व्यापारी और सभी वर्ग के लोग, महानगरों की ओर भागते दिखाई देते हैं। गाँवो की परम्परागत गरिबी और दारिद्रय के कारण महानगरों की अधिक जीवन सुविधाओं का लोभ ग्रामीणों के आकर्षण का कारण बनता है और बस, इसीलिए सिर्फ पैसे कमाने के लिए और पेट-पालन के साथ-साथ कम समय में ज्यादा सम्पन्न बनने के लिए लाखों की संख्या में लोग महानगरों की ओर आते है। अब "अर्थ" ही महानगरों का भगवान होने के कारण उसको प्रसन्न करने के लिए हर तरह के काम और हथकण्डें अपनाएँ जाते है। परिणामस्वरुप पारिवारिक रिश्तें-नातों के साथ-साथ सभी सम्बन्ध पैसों पर आकर रुक जाते है। पैसे के लिए रिश्तें बनते भी है और बिगडते भी है। महानगरों में एक प्रकार से पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक आदि सभी रिश्तें और आदान-प्रदान का केन्द्र पैसा ही बनता है। अर्थ के प्रभाव के कारण मानवीय सम्बन्ध अर्थ-शून्य बनते दिखाई देते है। यहाँ हर व्यक्ति अपना स्वार्थ देखता है और किसी दूसरे की चिंता करने की उसे आवश्यकता नहीं महसूस होती। इस वर्तमान अर्थ-तंत्र का भारी प्रभाव रिश्तें-नातों पर पडता हुआ दिखाई देता है। आधुनिक उपन्यासकारों ने इस व्यापारिकता का और अर्थकेन्द्रित रिश्तेंनातों का वर्णन अत्यंत सफलता से किया है।

6. महानगरीय जीवन में होटल, क्लब, रेस्तराँ आदि :-

बडे-बडे होटल, रेस्तराँ, कॉफी हाऊसेज, बीयर-बार और क्लब आदि महानगरीय जीवन का अंग बन चुक है। आधुनिक पीढी का दिन भर का काफी समय इन होटलों और क्लबों में व्यस्त रहता है। देशी-विदेशी संगीत का आस्वादन करते हुए काफी स्वतंत्रता के साथ यहा मुक्त व्यवहार की सुविधा प्राप्त होती है। व्यापारियों, प्रेमियों और परिवारों को भी मन बहलाने के लिए या अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए यहाँ आना अनिवार्य सा हो गया है। बडी-बडी पार्टियाँ और सभा-समारोहों का आयोजन भी इन्हीं अलिशान होटलों और रेस्तराँओं में सम्पन्न होता है। खाना-पीना, शराब और स्त्री आदि सभी का उपभोग यहाँ हो सकता है। महानगरों में अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार व्यक्ति छोटे-बडे रेस्तराँ में जाकर पैसा खर्च करता है। बडे-बडे महानगरों में एक होटल-संस्कृति पनप रही है जिसके तहत कालाबाजार, तस्करी

और वेश्या-वृत्ति आदि को बढावा मिल रहा है। बम्बई महानगर अपनी अपार जनसंख्या, गरीबी, पूँजीपति आदि के कारण महानगर की वास्तविक छवि रूपायित करता है। जहाँ एक ओर गगनचुम्बी "फाइव्ह-स्टार" होटलों का निर्माण हुआ है तो दूसरी ओर छोटे-मोटे रेस्तराँओं से महानगर का कोना-कोना व्याप्त है। महानगरों में घर के बाद दूसरा स्थान होटल, क्लब और रेस्तराँ आदि को मिलता है। घर में जो नही मिल सकता वह सब कुछ इन होटलों में मिल जाता है।

7. महानगरों में असुरक्षितता की समस्या :-

महानगरों का वातावरण भीड भरा और व्यस्त रहता है। यहाँ हर समय, हर स्थान पर अनेक खतरों से सामना करना पडता है। घर से बाहर निकलने पर पता नहीं चलता है कि व्यक्ति को कौन-कौन से संकटों से सामना करना है। यातायात की भागदौड में आपघात का भय सताता रहता है। पैसों के लिए और कीमती चीजे पाने के लिए महानगरों के गुण्डे छुरी और तलवार से ही बात करते हैं। जातीय और साम्प्रदायिक दंगों में होनेवाली मार-धाड में पुलिस और गुण्डों का शिकार सामान्य व्यक्ति ही बन सकता है। खान-पान की चीजों में भी मिलावट और सस्तेपन के कारण मृत्यू का शिकार बनने का डर भी यहाँ पर बना रहता है। इस प्रकार अनेक प्रकार से अनिश्चितता और असुरक्षितता का वातावरण महानगरीय उपन्यासों में चित्रित हुआ है।

8. महानगरीय जीवन में छोटेपन का अहसास :-

नौकरी और अधिक सुख-सुविधाओं की तलाश में व्यक्ति महानगर की चकाचौंध और आकर्षण से भरी दुनिया की ओर उन्मुख होता है। एक बार महानगर में आकर फिर वापस जाना उसके बस में नही होता। महानगरीय समस्याओं से झगडते-झगडते, संघर्ष करते-करते उसकी सारी आशाओं, आकांक्षाओं के सपने टूटकर बिखर जाते हैं। इस पैसों की दुनिया में आँखें और दिमाग भी चकरा जाता है। अनेक वर्गों में बँटा महानगरीय समाज देखकर हर वर्ग का व्यक्ति "अपने से उच्च वर्ग" की ओर देखकर अपने आपको छोटा या बौना महसूस करता है। यहाँ उच्च-मध्य वर्ग, मध्य-वर्ग, निम्न-वर्ग और सभी बुध्दिजीवियों को भी इस छोटेपन के अहसास से छूटकारा नहीं है। यहाँ कोई अशिक्षित व्यक्ति भी स्मगलींग आदि धन्धों में घण्टों में लाखों की कमाई करता है और ईमानदारी से मजदूरी करनेवाला वर्ग उनकी ओर देखता रहता है। पढे-लिखे और बुध्दिजीवियों को बेकार भटकते हुए अपनी उपाधियाँ व्यर्थ लगने लगती हैं। इन महानगरों की उँची-उँची वातानुकूलित इमारतें, बडे-बडे कीमती अलिशान फलैट, कारें, आलिशान रेस्तराँ आदि को देखकर प्रत्येक व्यक्ति कहीं-न-कहीं यहाँ खुद को छोटा और बौना महसूस करता है।

9. **महानगरों में अकेलेपन की समस्या :-**

महानगरों में अलगाव और परायेपन की समस्या के कारण व्यक्ति को अकेलेपन का अभिशाप भोगना पड रहा है। यह अलगाव और परायापन दो प्रकार का है। एक अपना गाँव, अपने लोग, अपना परिवेश छोडकर आनेवाले लोगों में अपने जीवन-मूल्य छुटने का दर्द है और इसी पीडा को सहता हुआ व्यक्ति अलगाव को महसूस करता है। दूसरी बात महानगर की भाग-दौड, यातायात और व्यस्तता के कारण न कोई किसी से बात करता है न ही लोगों का एक दूसरे से परिचय होता है। ऐसा व्यक्ति जो बाहर से नौकरी, व्यापार के हेतु महानगरों में आता है, महानगरीय माहौल में अपना तालमेल नहीं बिठा पाता। परिणामस्वरूप व्यक्ति सब के बीच होते हुए भी पराया और अकेला बनता जा रहा है।

10. **महानगरीय जीवन में व्यक्ति की विक्षिप्त मनोदशा :-**

महानगरों में जाकर व्यक्ति सबसे अपरिचित होता है। अलगाव और अकेलापन उसे मानसिक रूप से बिमार बनाता हैं और बार-बार वह अपने मन का सन्तुलन खो बैठता है। उसका यह सन्तुलन बिगडानेवाले और भी अनेक कारण हो सकते है जैसे - बेकारी और आर्थिक, सामाजिक विषमता आदि। प्रायः अनेक उपन्यासों में इस प्रकार अपना मानसिक सन्तुलन खोनेवाले अनेक चरित्रों का निर्माण हुआ है। इस अवस्था में व्यक्ति अपने आप को छोटा महसूस करता हुआ सबसे उपेक्षित मानता है और कभी-कभी आत्महत्या की सोचता है, करता भी है। अनेक उपन्यासों में इस प्रकार मानसिक तणाव को सतत सहन करनेवाले और सहन न कर सकनेवाले अनेक चरित्रों को हम देख सकते हैं। प्रेम और पैसे के व्यवहार में विश्वासघात व्यक्ति सहन नहीं कर पाता। या तो बदले की भावना में, ग्लानि में उसका मानसिक सन्तुलन बिगडता है और तोड-फोड एवं मरने-मारने की बाते वह करने लगता है। समाज में व्यक्ति की सुरक्षा के अभाव के कारण भी वह गडबडा जाता है। सामान्य व्यक्ति भीतर ही भीतर गहरा असन्तोष अनुभव करता हुआ चुप बैठता है। स्वार्थ, अपाधापी, लूट-खसोट आदि से वह इतना परिचित है कि प्रतिक्रिया के रूप में उनसे अपरिचित बना रहना चाहता हैं। महानगरों में अर्थाभाव के कारण, गुण्डों के आतंक के कारण और वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था के कारण व्यक्ति विक्षिप्त बनता जा रहा है।

11. **महानगरों में विलासिता के बढते चरण और सम्बन्धों की शिथिलता :-**

आधुनिक उपन्यासों में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विविध स्तरों को अत्यंत सूक्ष्मता और प्रामाणिकता से सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। आज-कल महानगरीय व्यस्तता के कारण पारिवारिक सम्बन्ध स्वस्थ नहीं रह पा रहे है और स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में बन रहे तनाव और उनके टूटने तक की स्थिति का वर्णन उपन्यासों में मिलता है। स्त्री-पुरूष संबंधों में शिथिलता के विविध स्तरों

को उद्घाटित करने में आज का उपन्यासकार जिस रूप में प्रवृत्त हो सका है, उसका कारण हमारा बिखरा हुआ सामाजिक परिवेश है। आज शिक्षा के अधिकाधिक प्रसार से और स्कूल, कालेज तथा विश्व-विद्यालयों में लडके-लडकियाँ एक-दूसरे के सम्पर्क में आ रहे है और विभिन्न औद्योगिक प्रतिष्ठानों, दफतरों, बैंकों आदि में एकसाथ काम करते हुए अधिकाधिक परिचय प्राप्त करने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए आज स्त्री-पुरूष के काम और प्रेम-सम्बन्धों को अधिक ठोस और व्यावहारिक धरातल प्राप्त हो गया है। आज स्त्री का हीनता भाव कम होता जा रहा है और यह स्थिति "मुक्त-यौन" के विचारों तक पहुँच चुकी है। पाश्चात्य देशों की देखा-देखी भारतीय युवा-पीढी ने "फ्री-लव्ह" को एक फैशन के रूप में अपनाने का प्रयास चलाया है। मकान की भयंकर समस्या के कारण स्त्री-पुरूष किसी होटल में, समुद्र के किनारे या पिक्चर हॉल में अपनी वासना तृप्ति का प्रयत्न करते दिखाई देते है। वर्तमान महानगरीय माहौल में न पति-पत्नी का सम्बन्ध बाकी है न गुरू-शिष्या का। "समाज-सेवा" का व्रत धारण कर खुले आम वेश्या-वृत्ति अपनाने का कार्य उच्च-वर्ग और मध्यवर्ग के लोगों में बढता जा रहा है। फिल्म व्यवसाय में तो "कमीटमेन्ट" के नाम पर बलात्कार होते दिखाई देते हैं और महानगरों में नवधनिक वर्ग की हवस को पूरा करने के लिए हररोज अनेक लडकियाँ "कॉलगर्ल" बनती जा रही हैं।

12. **महानगरों में वेश्या-समस्या :-**

आज के महानगरीय उपन्यासों में चित्रित वेश्या-व्यवसाय के बदलते सन्दर्भों को देखकर पता चलता है कि परम्परागत वेश्या-व्यवसाय ने अपना रूप बदल दिया है। प्राचीन काल से वेश्या और उससे सम्बान्धित अनेक समस्याओं का अंकन अनेक उपन्यासकारों ने काफी मात्रा में किया है। स्त्री वेश्या क्यों बनती है? इसके अनेक कारण देखे जा सकते हैं। अर्थाभाव और पेट-पालन की भयावह समस्या के साथ-साथ बेहतर, विलासितापूर्ण और स्वच्छन्द जिन्दगी बिताने की इच्छा से भी स्त्री-वेश्या बनती हैं। कभी-कभी उसे छलपूर्वक और केवल पैसों के लिए बेचकर वेश्या बनाया जाता है। महानगरों में पनपनेवाला नव-धनिक वर्ग और मंत्री से लेकर अनेक अधिकारियों तक को अपनी वासना-पूर्ति के लिए स्त्री और शराब की आवश्यकता महसूस होती है और परिणाम स्वरूप पैसे के लोभ में और कभी बलपूर्वक उसे वेश्या बनना पडता है। अपने पति के आतंक द्वारा छली गयी या प्रेमी से धोखा खाकर भी स्त्रीयाँ वेश्या बनी दिखाई देती हैं। आज-कल बडे-बडे महानगरों में वेश्या-जीवन और वेश्या समस्या समाज की अत्यन्त गम्भीर समस्या बनती जा रही है। आधुनिक समाज में वेश्या-वृत्ति की परिभाषा बदल चुकी है। डॉ. कुँवरपालसिंह के मतानुसार - "नयी वेश्याएँ रूप के बाजार में जाकर तन नहीं बेचती। बडे-बडे होटलों, क्लबों, डाकबंगलों, कोठियों, हिल-स्टेशनों आदि में सुशिक्षित नारियाँ रात के अन्धकार में रूप का सौदा करती हैं और दिन में

सभ्य-सामान्य जीवन व्यतीत करती हैं। इन्हें आधुनिक भाषा में "कॉलगर्ल" और "सोसायटी गर्लस्" कहते हैं। ये प्रेमचंद-कालीन वेश्याओं की भाँति नाचना-गाना पसन्द नही करती बल्कि जितने समय के लिए लोग उन्हें पैसा देते हैं केवल उतने समय शैय्या-सहचरी बनकर या अन्य प्रकार से उनका मनोरंजन करती हैं। ये नारियाँ "मॉडर्न एटीकेट" से पूर्ण परिचित हैं। वेश्या-वृत्ति के इस नये रूप के लिए आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था उत्तरदायी है।"[17]

निष्कर्ष :-

स्पष्ट हे कि महानगरीय जनजीवन समस्याओं से घिरा हुआ हे। विविध प्रकार की समस्याओं ने महानगरीय जनजीवन को तहस-नहस कर डाला हे। इन समस्याओं में सबसे बडी समस्या झोपडपट्टी जनजीवन की समस्या हे। इसी के परिणामस्वरूप महानरीय जनजीवन धोखे में आ रहा हे।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय में हमने झोपडपट्टी की संकल्पना, झोपडपट्टी एक जागतिक समस्या, भारत में स्थित झोपडपट्टियों की स्थिति, बम्बई महानगर की झोपडपट्टियों की स्थिति और गति, महानगरीय जनजीवन की समस्याओं का झोपडपट्टी निर्मिती में योगदान, नागरीकरण के कारण, औद्योगिकरण, यातायात और दूरसंचार के साधन, आर्थिक कारण, राजनीतिक कारण, सांस्कृतिक कारण, महानगरों की विकासयात्रा, नगरों का वर्गीकरण, महानगरों का मानवजीवन में आकर्षण, धारावी झोपडपट्टी में परिवर्तन की हवा, चुनावी राजनीति में झुग्गी-झोपडियों का योगदान, बम्बई महानगर और झोपडपट्टी निर्मूलन अभियान, महानगरीय जनजीवन की समस्याएँ आदि बातों को नजरअंदाज करते हुए झुग्गी-बस्तियों के निर्माण के कारणों की तलाश की हे। इन झुग्गी-झोपडियों का महानगरीय जनजीवन पर होनेवाला बुरा असर, महानगरों में चलनेवाले अवैध-धन्धें, महानगरों में बढनेवाला वेश्या-व्यवसाय, महानगरों की तस्करी, हातभट्टी, पाकीटमारी, चोरबजारी, गुनहगारी आदि पर कितना गहरा असर पड गया हे, इसपर भी चिंतन किया हे। झोपडपट्टी जनजीवन की बीमारी केवल भारत की ही नहीं, अपितु विश्व के महानगरों में भी यह कोट कैसे फैलने लगा हे, और औद्योगिकरण ही इस के लिए कैसे कारण हो सकता हे, इसपर भी यहाँ हमने सोचा हे। महानगरीय पूंजीपति संस्कृति में से ही झोपडपट्टी का निर्माण कैसे हुआ हे, इसकी भी तलाश की हे।

संदर्भ सूची :-

1. The Random House Dictionary of the English Language, The unabridged Edition, Editor - Jess Stein, The Tulashi Shah Enterprises, Bombay 1, 1970, Page-1343
2. The Little Oxford Dictionary, New Edition, Fifth Edition 1980, by Julia Swannell, Oxford University Press, Page - 553.
3. प्रा. केचे, सवदी, कोळेकर - "नागरी भू-विज्ञान", सी जमनादास ॲण्ड कंपनी, मुंबई, प्र.सं. 1981, पृ. 69
4. वही, पृ. 69
5. वही, पृ. 68
6. सं. स.मा. गर्गे - "भारतीय समाज विज्ञान कोष" समाजविज्ञान मंडळ, पुणे, खंड - 3, प्र.सं. 1989, पृ. 3
7. वही, पृ. 4
8. वही, पृ. 4
9. वही, पृ. 6
10. प्रा. नंदकुमार रामचंद्र रानभरे - "देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याएँ एक अनुशीलन", शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध (अप्रकाशित), सन 1990
11. नवभारत टाइम्स, बम्बई, 27 मार्च, 1994, पृ. 3
12. "साप्ताहिक सकाळ" (मराठी आवृत्ति), 14 मे, 1994, पृ. 12
13. "नवभारत टाइम्स", बम्बई, 28 अक्तूबर, 1993, पृ. 11
14. "नवभारत टाइम्स", बम्बई, 28 अक्तूबर, 1993, पृ. 11
15. वही, पृ. 11
16. "नवभारत टाइम्स" बम्बई, 27 मार्च, 1994
17. डॉ. कुवरपाल सिंह - "हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना, पाण्डुलिपी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1976, पृ. 42